।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।

पाक्षिक
पाथेय कण

आषाढ़,शु.४ युगाब्द ५१२०, वि.२०७५
१६ जुलाई २०१८
वर्ष ३४ : अंक ७

परम सुहृद पाठक-गण,

सप्रेम नमस्कार।

हमें कई पाठकों से शिकायत मिल रही है कि उन्हें अंक प्राप्त नहीं हो रहे हैं। कार्यालय से सभी पाठकों को पाथेय कण का नियमित प्रेषण किया जा रहा है। अतः पाठकों से निवेदन है कि अंक नहीं मिलने पर पाथेय कण कार्यालय में आप प्रातः १० से सायं ५ बजे के बीच अवश्य सूचित करें।

उक्त सूचना देने के लिए इनसे सम्पर्क किया जा सकता है।

श्री सुरेश शर्मा- ०१४१-२५२९३३४
श्री ओमप्रकाश- ९९२९७-२२१११

इसी आशा के साथ
जय श्रीराम।

आपका
प्रबंध सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष ₹ 100/- पन्द्रह वर्ष ₹1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)
सम्पर्क : 9414447123, 9929722111
0141-2529334

Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

आपात-काल का समर्थन निरंकुशता का समर्थन है

अपने इस भारत देश में हो क्या रहा है? बड़ी विचित्र और दुःखद बात है कि कुछ लोग १९७५ में थोपे गये आपात-काल का समर्थन कर रहे हैं। भारतीय लोकतंत्र का यह काला अध्याय यद्यपि चालीस साल पहले समाप्त हो गया था, लेकिन इसको याद करने पर आज भी कप-कपी छूट जाती है। जिन लोगों ने इस विभीषिका को भोगा था वे जानते हैं कि किस प्रकार की क्रूर तानाशाही उस समय देश में थी। २५ जून १९७५ की अर्द्ध-रात्रि के समय आपात-काल लागू किया गया था। इसी के साथ वाममार्गियों के अतिरिक्त सभी विपक्षी दलों के नेताओं को मीसा में बन्द कर दिया गया। सत्ताधारी दल के भी हिम्मती नेताओं को जेल की हवा खिला दी गई।

मीसा का अर्थ है- आन्तरिक सुरक्षा अधिनियम। इस काले कानून में सरकार को अधिकार मिल गया था, कि वह किसी को भी, कितने भी समय के लिये जेल में बन्द कर सकती थी। किसी भी न्यायालय में अपील करने का मीसा-बन्दियों को अधिकार नहीं था। २५ जून की रात से गिरफ्तारियों का जो सिलसिला शुरु हुआ वह कई दिनों तक चलता रहा। राजनैतिक दलों के बाद सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं की बारी आई। उनके भी सैकड़ों कार्यकर्ताओं को जेल में बन्द कर दिया गया। कौन कब बन्दी बनाया गया इसके समाचार भी नहीं मिल पाते थे क्योंकि समाचार-पत्रों पर सख्त सेंसर-शिप लागू थी। समाचार पत्र-पत्रिकाओं में वही छप सकता था जिसे सरकार ठीक माने। आज के बड़बोले सभी समाचार-पत्र तथा पत्रकार उस समय दुम-दबाये, डरे, सहमे बैठे हुए थे।

भय का ऐसा वातावरण था, कि लोग एक-दूसरे से बात-चीत भी दबे स्वरों में करते थे। घर में भी लोग श्रीमती इंदिरा गाँधी का नाम लेने से डरते थे। दीवारों के भी कान होते हैं पता नहीं कब कोई सुन ले और पुलिस आ धमके। मीसा के अतिरिक्त डीआईआर (डिफेंस ऑफ इण्डिया रूल) भी था। इसमें भी कोई सुनवाई नहीं, जमानत नहीं, कोर्ट का दखल नहीं। वास्तव में अपने सभी विरोधियों या विरोध कर सकने वालों को एक साथ निपटा देने की यह तब की प्रधानमंत्री की योजना थी। इसलिये संघ और विहिप जैसे संगठनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। प्रतिबन्ध के साथ ही हजारों कार्यकर्ताओं को देश भर में जेल में ठूंसा गया ।

ऐसा भय और आतंक का वातावरण आपात-काल में बन गया था। जनता के सभी लोकतांत्रिक अधिकार छीन लिये गये थे। लाखों परिवारों पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। जेलों में बन्द अधिकांश लोग सोचते थे कि अब पूरी जिन्दगी जेल में निकालनी पड़ेगी। उधर जेलों के बाहर वाले सोचते थे, कि अब न चुनाव होंगे, न नेता-कार्यकर्ता जेलों से बाहर आयेंगे और श्रीमती गाँधी की तानाशाही मजबूती से जम जायेगी। इसलिये जेल में बन्द लोगों के परिजन भी भय के कारण उनसे मिलने नहीं जाते थे। डर रहता था, कि उनको भी कहीं 'भीतर' न कर दिया जाये।

इसलिये यदि कोई आपात-काल का समर्थन करता है तो इसका अर्थ है कि वह तानाशाही मानसिकता का है, आपात-काल लगाने वालों के उत्तराधिकारियों में भी निरंकुशता का जीवाणु मौजूद है और पूरे देश को ऐसे लोगों से सावधान रहना होगा। ■

आपात्काले तु सम्प्राप्ते यन्मित्रं मित्रमेव तत्।
वृद्धिकाले तु संप्राप्ते दुर्जनोऽपि सुहृदभवेत्।।

संकट के समय में जो मित्रता निभाता है, वही वास्तव में सच्चा मित्र है। उन्नति (अच्छे समय) के समय में तो बुरे और स्वार्थी व्यक्ति भी मित्र बन जाया करते हैं।

(पंचतंत्र-मित्रभेद/२१)

विश्व को भारत के वास्तविक रूप का दर्शन कराया

भगिनि निवेदिता अद्‌भुत लेखिका थीं। अपनी प्रखर लेखनी से वह कठिन से कठिन विषय को सरल रूप में पाठकों को प्रस्तुत करती थी। अपने लेखन के माध्यम से वे पूरे विश्व में अपने बाचकों से परिचित थीं। इस लेख में उनके इसी कुशल लेखन से परिचित होंगे पाठक गण–

एक लेखिका के रूप में भगिनि निवेदिता की भाषा शैली इतनी सुसंस्कृत तथा शिष्ट होती थी कि उनकी भावनाऐं सीधे पाठकों के ह्रदय तक पहुँच कर उनके दिलोदिमाग पर सीधे दस्तक देती थी। उनका लेखन कौशल्य विभिन्न विषयों के सरल प्रस्तुतीकरण में उनकी मदद करता। वह अपने लेखों को इतनी गम्भीरता से तथा निष्ठापूर्वक किसी भी विषय पर लिखतीं कि वह एक स्थायी निधि बन जाता था।

भगिनि निवेदिता के दो लेख लैम्ब्स अमंग वुल्व्हज (Lambs among wolves) और एग्रेसिव हिन्दूइज्म (Aggresive Hinduism) जो बाद में पुस्तक रूप में प्रकाशित हुए, में ईसाई मिशनरियों की अधकचरी बातों का प्रखर विरोध किया गया था। इन लेखों की आक्रामक तथा निडर शैली उनके भाषा पर अधिकार, उनके ज्ञान और श्रद्धा पर प्रकाश डालती है।

उपर्युक्त दो लेख तथा दी वेब ऑफ इण्डियन लाइफ (The Web of Indian life) तथा स्टडीज फ्रॉम ऐन ईस्टर्न होम (Studies from an eastern Home) इन दो ग्रंथों में भारतीय जीवन के अंतरंग पहलुओं का सहानुभूति पूर्ण तथा व्यवस्थित वर्णन किया गया है। प्रथम पुस्तक में वर्णित हिन्दू जीवन शैली की मधुरता में भारतीय महिलाओं की जीवन शैली तथा विचार धारा को बड़े ही रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक के प्रत्येक वाक्य में भगिनि निवेदिता की भारत के प्रति सहानुभूति, प्रेम तथा संवेदना की झलक नजर आती है। इस ग्रंथ को पढ़ने के बाद जिन लोगों ने भारत के बारे में ईसाई मिशनरियों के भ्रामक प्रचार से जो पूर्वाग्रह ग्रस्त विचार बना कर रखे थे,वे विचार पाठकों को बदलने पड़े।

भगिनि की कुछ प्रमुख पुस्तकों में दी मास्टर एज आय सॉ हिम (The master as I saw him); नोट्स ऑफ सम वाण्डरिंग विद स्वामी विवेकानन्द (Notes of some wandering with Swami Vivekanand) तथा केदारनाथ एण्ड बद्रीनाथ : ए पिलग्रिम्स डायरी (Kedarnath & Badrinath a Pilgrims Dairy) चरित्रात्मक ग्रंथ हैं। स्वामी जी ने कैसे एक अंग्रेजी महिला का पूर्ण रूपांतरण कर उसे हिन्दू जीवन शैली में आत्मसात कर दिया, ऐसे स्वामीजी के साथ भगिनि के अनुभवों का संकलन है, उपर्युक्त पुस्तकें। दी फूट फाल्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री (The foot falls of Indian History) में कुछ ऐतिहासिक निबन्धों का संग्रह है। इस ग्रंथ को भारत माता को समर्पित किया गया है।

काली दी मदर (Kali the mother) में भगिनि ने 'देवी काली' की जो व्याख्या की है वह पूर्णतः मौलिक है। कुल मिलाकर घिसे पिटे विषय भी उनकी लेखनी से मनोहारी बन जाते थे– जगमगा उठते थे। उनकी कृति, उनका लेखन हिन्दू विचारधारा को विश्व पटल पर स्थापित करता है। भारत को उनके योगदान को सदैव स्मरण रखना होगा।

*–**केदार चतुर्वेदी**, जयपुर*

आगामी पक्ष (१ अगस्त से १५ अगस्त २०१८) के विशेष अवसर

(श्रावण कृष्ण ४ से शुक्ल ५ तक)

जन्मदिवस

१ अगस्त (१८८२)–राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन की जयंती

२ अगस्त (१८६१)– प्रसिद्ध रसायन शास्त्री आचार्य प्रफुल्लचन्द राय का जन्म दिवस

श्रावण कृष्ण ६ (इस बार ६ अगस्त)– आठवें गुरु हरिकिशन जी की जयन्ती

१२ अगस्त (१९१९)– महान वैज्ञानिक विक्रम साराभाई का जन्म दिवस

१३ अगस्त (१६३८)– वीर दुर्गादास राठौड़ की जयंती

१५ अगस्त (१८७२)– महर्षि अरविन्द की जयंती

श्रावण शुक्ल ५ (इस बार १५ अगस्त)– कल्कि जयंती

पुण्यतिथि

५ अगस्त (२००५)– इन्दौर की भीषण बाढ़ में ३० लोगों के प्राणों की रक्षा करने वाले मनोज चौहान की पुण्यतिथि

११ अगस्त (१९०८)– क्रांतिकारी खुदीराम बोस की शहादत

१३ अगस्त (१७९५)– महारानी अहल्या बाई होल्कर की पुण्यतिथि

१४ अगस्त (१९१५)– सरदार बन्ता सिंह की शहादत

१५ अगस्त – भारत छोड़ो आंदोलन में देवशरण सिंह, फुलेना प्रसाद एवं उदयचन्द की शहादत (१९४२), महान क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह का महाप्रयाण (१९४७)

महत्वपूर्ण घटनायें

२ अगस्त (१९५४)– पुर्तगालियों के कब्जे से दादरा–नगर हवेली की मुक्ति

८ अगस्त (१५०९)– विजय नगर के प्रतापी सम्राट श्रीकृष्णदेव राय का राज्याभिषेक

९ अगस्त– भारत छोड़ो आंदोलन प्रारम्भ (१९४२)

– क्रांतिकारियों ने काकोरी के पास अंग्रेजों का खजाना लूटा (१९२५)

१४ अगस्त (१९४७)–अखण्ड भारत स्मृति दिवस

१५ अगस्त (१९४७)– खण्डित भारत की स्वतंत्रता

ऐसे होता था मरु-भूमि में वर्षा जल का संरक्षण

❑ डॉ. शुचि चौहान

वर्षा के मामले में राजस्थान को गरीब प्रदेश भी कहा जाता है क्योंकि यहां भारत के अन्य राज्यों की तुलना में कम वर्षा होती है। राजस्थान का पश्चिमी भाग अत्यंत रेतीला है, इसे थार रेगिस्तान के नाम से जाना जाता है। रेगिस्तान में पानी की एक-एक बूंद का मोल क्या होता है इसे हमारे पूर्वजों ने समझा और उसे सहेजने के लिए अनेक जतन किए जो आज भी कुंडी, टांका, बावड़ी, जोहड़ आदि अनेक रूपों में मौजूद हैं। वे पानी को पहले संचित करते थे फिर उसका उपयोग करते थे। आज हम संचय कम करते हैं और संचित पानी का दोहन अधिक कर रहे हैं। बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण के नाम पर पारम्परिक जल स्रोतों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। नदी-नालों व पारम्परिक जल संरक्षण प्रणालियों को संरक्षित न करके उन्हें प्रदूषित कर रहे हैं व पाट रहे हैं। आज आवश्यकता है प्राकृतिक संसाधनों का मूल्य समझने की, उन्हें संरक्षित रखने के तरीके अपनाने की, जो हमारे पूर्वज हमें विरासत में दे गए। सोचने वाली बात है यदि आज हमने इन्हें नजरअंदाज किया तो कल हम अपने बच्चों को क्या देकर जाएंगे।

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। यह जनसंख्या के मामले में नौवें स्थान पर तो बारिश के लिहाज से सब राज्यों से पीछे है। किसी समय यहाँ समुद्र हिलोरें मारता था परंतु आज रेत की आंधियाँ चलती हैं। अरावली पर्वतमाला से सुशोभित राजस्थान में ३३ जिले हैं। इनमें से १३ जिले- जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर, जालौर, चूरू, गंगानगर, सीकर, हनुमानगढ़, सिरोही तथा झुंझनूं अरावली पहाड़ियों के पश्चिम में और बाकी पूर्व में हैं। जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, नागौर, चूरू में रेत के बड़े-बड़े टीले हैं, जिन्हें धोरे कहा जाता है। इस क्षेत्र में बारिश का औसत सबसे कम है। यहाँ भूजल स्तर बहुत नीचे है और अधिकांश जगह पानी खारा है। पूर्वी राजस्थान के कुछ जिले छोड़ दें तो यहाँ भी अधिकांश जगह पानी में लवण की मात्रा अत्यधिक है। कई जगह जमीन भी खारी है। ऐसे स्थानों में खारे पानी की झीलें हैं, जहाँ नमक बनाया जाता है, जैसे- सांभर, डीडवाना आदि।

राजस्थान में मानसून के बादल अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से आते हैं। यहाँ तक आते-आते उनकी आर्द्रता कम हो जाती है। वे दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर अरावली पर्वतमाला के समानांतर बारिश करते हुए उड़ते हैं। इसीलिए इस पर्वत माला की गोद में बसे जिलों में अच्छी बारिश होती है, परंतु पश्चिमी राजस्थान की झोली खाली रह जाती है। ऐसी विषम परिस्थितियों में राजस्थान में वर्षा जल संरक्षण के अनेक तरीके विकसित किये गये।

यहाँ के लोगों ने उपलब्ध पानी को तीन नाम दिए- पालर पानी, पाताल पानी और रेजाणी पानी। पालर पानी अर्थात् बारिश का पानी, पाताल पानी अर्थात् जमीन की गहराई में स्थित भूजल और रेजाणी पानी अर्थात् रेत द्वारा सोख लिया गया बारिश का पानी, जो किसी-किसी क्षेत्र में खड़िया पत्थर की पट्टी पाए जाने के कारण रिस कर पाताल तक नहीं पहुंच पाता। लोगों ने उपलब्ध पानी के संरक्षण व उपयोग के समुचित प्रबंध किए व समयानुकूल प्रणालियाँ विकसित कीं, जिन्हें आज भी कई जगह जीवंत रूप में देखा जा सकता है। झीलें, तालाब, नाडी, जोहड़ व तलाई, खड़ीन, कुंडी (कुंड) या टांका, झालरा, नाड़ा या बंधा, बावड़ी तथा कुई इसी के उदाहरण हैं।

झीलें व तालाब

ऐसे स्थान जो चारों ओर से पहाड़ियों से घिरे हों, जहाँ वर्षा के पानी की अच्छी आवक हो, वहाँ उस पानी को रोक कर झीलों व तालाबों का निर्माण किया जाता था। जैसलमेर के राजा महारावल घड़सी द्वारा १६३५ में बनवाया गया **घड़सीसर** तालाब अभियांत्रिकी का अनुपम नमूना है। तीन मील लम्बे और एक मील चौड़े आगर (तट) वाले इस तालाब का आगोर (भराव क्षेत्र) १२० वर्ग मील तक फैला हुआ है। यहाँ घाट, मंदिर और पाठशालाएं भी थीं। पानी को बहाकर लाने के लिए आठ किमी लम्बी मेड़बंदी की गई थी। घड़सीसर भरने के बाद पानी एक एक कर अन्य नौ तालाबों- नौताल, गोविंदसर, जोशीसर, गुसाबसर, भाटियासर, सूदासर, मोहतासर, रतनसर और किसनघाट को भी लबालब कर देता था। उसके बाद भी बचे पानी को बेरियों (कुएंनुमा कुंडों) में एकत्रित कर लिया जाता था।

आज घड़सीसर के आगोर (भराव क्षेत्र) में वायु सेना का हवाई अड्डा है। आसपास की जमीनों पर कॉलोनियां कट गई हैं, कब्जे हो गये हैं। घाट, मंदिर, पाठशालाएं जीर्ण अवस्था में हैं।

घड़सीसर अपने मूल स्वरूप में आने के लिए तड़प रहा है।

जैसलमेर से लगभग ४० किमी दूर एक **जसेरी** तालाब भी है, जो कभी नहीं सूखता। जसेरी के आगर (तट) के नीचे खड़िया पत्थर की पट्टी पायी जाती है जो बारिश के पानी को पाताल तक नहीं जाने देती। इस तरह इसमें पालर व रेजाणी दोनों पानी इकट्ठे होते हैं। पिछली बारिश का पानी सूखने से पहले ही अगली बारिश हो जाती है। तालाब के बीच में एक बावड़ी भी है।

नाडी

ऐसी जगह जहाँ पानी की आवक कम हो और उसे रोकने के लिए जगह भी कम हो वहाँ नाडी का निर्माण किया जाता था। यह धरती की सतह पर ३ से१२ मी. गहरा एक गड्ढा होता है जिसमें वर्षा जल आकर इकट्ठा होता रहता है। जैसलमेर में पालीवालों के ऐतिहासिक चौरासी गाँवों में ७०० से अधिक नाडियां या उनके अवशेष मिलते हैं। १५२० ई. में राव जोधा ने सर्वप्रथम एक नाडी का निर्माण करवाया था।

जोहड़ व तलाई

जोहड़ नाडी से थोड़ा बड़ा होता है। इसमें पानी की मात्रा नाडी से अधिक होती है। ये मिट्टी के छोटे डैम की तरह होते हैं। वर्षा जल के बहाव क्षेत्र में बाँध बनाकर वर्षा के पानी को रोक कर इन्हें बनाया जाता है।

तलाइयाँ जोहड़ का ही एक रूप हैं। खारी जमीन के बीचोंबीच भी तलाइयाँ मिलती हैं। सांभर झील के खारे आगोर में मीठे पानी की तलाइयां वर्षा जल संरक्षण की अद्भुत मिसाल हैं। जैसलमेर के पास में ही है शीतल तलाई जो सीतलाई के नाम से प्रसिद्ध है। ५२ डिग्री सेंटीग्रेड तापमान में भी इसका जल शीतल रहता है।

खड़ीन

खड़ीन भूमि की सतह पर बहने वाले वर्षा जल को संग्रहीत करने के लिये ढलान वाली भूमि के नीचे बनाये जाते हैं। इसके दो तरफ मिट्टी की पाल होती है, तीसरी तरफ मिट्टी की चादर बनायी जाती है। खड़ीन का क्षेत्र विस्तार ५-७ किमी तक होता है। पाल सामान्यतया २-४ मी तक ऊंची होती है। पानी की मात्रा अधिक होने पर पानी अगले खड़ीन में प्रवेश कर जाता है।

इस तकनीक द्वारा बंजर भूमि को भी कृषि योग्य बनाया जाता है। जिस स्थान पर पानी इकट्ठा होता है उसे खड़ीन तथा इसे रोकने वाले बाँध को खड़ीन बाँध कहते हैं। जैसलमेर जिले में लगभग ५०० छोटी बड़ी खड़ीने है। पानी उतरने पर इनमें गेहूं की खेती की जाती है।

कुंडी, कुंड या टाँका

यह रेतीले क्षेत्रों में वर्षा जल को संग्रहीत करने की परम्परागत प्रणाली है। इस पानी को पीने के काम में लिया जाता है। यह एक छोटा भूमिगत टैंक होता है। इसका निर्माण जमीन की ढलान के हिसाब से किया जाता है। जिस आंगन में इसे बनाया जाता है उसे आगोर या पायतान कहते हैं, जिसका अर्थ होता है बटोरना।

पायतान को साफ रखा जाता है क्योंकि उसी से बहकर पानी टाँके में जाता है। टाँका ऊपर से ढंका हुआ होता है। इसके मुहाने पर एक छेद होता है जिस पर जाली लगी होती है। जाली कचरे को अंदर नहीं जाने देती। टाँका ३०-४० फीट तक गहरा होता है। पानी को जमीन में रिसने से बचाने के लिए इनकी चिनाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है। कुंडी छोटी, कुंड उससे बड़ा और टांका विशाल होता है। इनमें क्रमशः दस हजार लीटर, पचास हजार लीटर व लाखों लीटर तक पानी संरक्षित किया जा सकता है। जयपुर के जयगढ़ किले में बना टांका इतना ही विशाल है।

झालरा

ऊँचे तालाबों और झीलों के रिसाव से बनी जलीय संरचनाओं को झालरा कहते हैं। इनका पानी पीने योग्य नहीं होता, स्नान आदि में काम लिया जाता है। इनका आकार आयताकार होता है व इनके तीन ओर सीढ़ियाँ बनी होती हैं। राजस्थान व गुजरात में झालरा बहुतायत में मिलते हैं। १६६० ई. में बना जोधपुर का महामंदिर झालरा जग प्रसिद्ध है।

नाड़ा या बंधा

राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में बंधों का चलन था। मानसून के दौरान बहते जल को नाली के द्वारा बंधे तक लाकर एकत्रित कर लिया जाता था। बंधे की सतह पत्थर की होने के कारण पानी जमीन में कम रिसता था और लम्बे समय तक विभिन्न कामों में प्रयोग होता था।

बावड़ी

राजस्थान में इसे बावड़ी तो गुजरात में वाव कहते हैं। कुछ बावड़ियाँ वास्तुशास्त्र की अद्भुत मिसाल हैं। इन्हें स्टेपवैल के नाम से भी जाना जाता है। बावड़ियाँ पीने के पानी, सिंचाई एवं स्नान के लिये महत्वपूर्ण जल स्रोत रही हैं। अधिकांश बावड़ियाँ मंदिरों, किलों या मठों के पास बनाई जाती थीं।

कुई

कुई में रेजाणी पानी इकट्ठा किया जाता है। इसे खोदना किसी कला से कम नहीं। यह बहुत संकरी होती है। खोदते समय मिट्टी दरकने का डर हमेशा बना रहता है। हर रोज खुदाई के साथ ही चिनाई भी करते जाते हैं। कई जगह चिनाई कारगर नहीं होती है तो खींप नामक घास के मोटे रस्से बना कर कुई की दीवार के साथ सटाकर गोलाकार व्यवस्थित कर मिट्टी को ढहने से रोका जाता है।

रस्से की कुंडली को टिकाने के लिए बीच-बीच में चिनाई भी की जाती है। खड़िया पत्थर आते ही खुदाई रोक दी जाती है। रेत में जमा नमी से पानी की बूंदें धीरे धीरे रिसकर कुई में एकत्रित होती रहती हैं। दिन भर में ३-४ घड़ा पानी इकट्ठा हो जाता है। कुई का मुंह छोटा रखा जाता है ताकि पानी का वाष्पीकरण न हो और मुंह को आसानी

> समाज की असली शक्ति उसकी संगठन शक्ति है। यह संगठन शक्ति परस्पर विश्वास, प्रेम, समरसता से ही उत्पन्न होती है।
>
> - काका कालेलकर (प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एवं पत्रकार)

से ढंका जा सके। राजस्थान के जिन–जिन क्षेत्रों में खड़िया पत्थर की पट्टी पाई जाती है वहां इस तरह की कुइयां मिलती हैं जैसे–चूरू, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर के गांव। एक समय में यहाँ हर घर में कम से कम एक कुई तो जरूर होती थी।

पुराने समय में यहां के लोग बारिश के पानी को तो संरक्षित करते ही थे, उपलब्ध पानी का भी कई बार उपयोग करते थे। स्नान घरों की नालियां इस तरह बनाई जाती थीं कि स्नान के बाद का पानी एकत्रित किया जा सके। इस पानी से कपड़े धोए जाते थे और फिर से एकत्रित कर लिया जाता था, जिसे घर की साफ सफाई और आंगन लीपने में प्रयोग किया जाता था। बर्तन राख व रेत से मांजे जाते थे। उन्हें जल की प्रत्येक बूंद की कीमत ज्ञात थी। वे *'सांई इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय'* के स्थान पर *'सांई जितना दीजिए वामे कुटुम्ब समाय'* की भावना से जल का उपयोग करते थे।

आज सुगमता से उपलब्ध पानी के कारण हमने अपने परम्परागत ज्ञान को बिसरा दिया है। इसीलिए पानी की कमी से जूझ रहे हैं। हमारे प्राकृतिक स्रोत रीते (खत्म) हो चले हैं। उनकी सार संभाल न करके हम अपने पैरों पर ही कुल्हाड़ी मार रहे हैं। अधिकांश कुएं व तालाब या तो पाट दिए गए हैं या उनमें गाद भरी है। भूजल का पुनर्भरण कम और दोहन अधिक हो रहा है। जिससे भूजल स्तर तेजी से नीचे जा रहा है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, साल भर में होने वाली कुल बारिश का ३१ प्रतिशत पानी धरती के अंदर जाना चाहिए जबकि इन क्षेत्रों में कुल ९ प्रतिशत ही जा रहा है, जो कि मानक से २२ प्रतिशत कम है। राजस्थान के अधिकांश क्षेत्र डार्क जोन(सूखा क्षेत्र)में हैं।

स्वतंत्रता के समय देश में प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता पाँच हजार घन मीटर थी और आबादी चालीस करोड़ थी। वर्ष २००० में यह उपलब्धता दो हजार घन मीटर रह गयी और आबादी सौ करोड़ पार कर गयी। सन् २०२५ में यह घटकर पंद्रह सौ घन मीटर रह जाने का अनुमान है जबकि जनसंख्या एक सौ सैंतीस करोड़ हो जाएगी।

आज वर्षा से मिलने वाले जल का लगभग आधा हिस्सा (४७%) नदियों में बह जाता है जो समुद्र में जाकर बेकार हो जाता है। भूमिगत जल, सतह पर उपलब्ध पीने योग्य जल संसाधनों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। आज वर्षा जल का संरक्षण व उसका उचित प्रबंधन समय की मांग है। पारम्परिक तरीके अपना कर ही जल संकट का सामना किया जा सकता है। ■

– डा.शुचि चौहान, *जयपुर*

पंचांग- श्रावण - (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द–५१२०, विक्रमी–२०७५, शाके–१९४०
(२८ जुलाई से ११ अगस्त २०१८ तक)

पंचक– २९ जुलाई (सायं ५.०६ बजे) से ३ अगस्त (दोपहर २.२५ बजे) तक, **प्रथम वन सोमवार**–३० जुलाई, **चतुर्थी व्रत**–३१ जुलाई, **नाग पंचमी**–२ अगस्त,**रोहिणी व्रत (जैन)**– ७ अग. **एकादशी व्रत**– ७ अगस्त(स्मार्त), ८अग. (वैष्णव), **प्रदोष** – ९अगस्त, **शनैश्चरी अमावस्या** –११ अगस्त

ग्रह-स्थिति

श्रावण कृष्ण पक्ष में **वक्री शनि**, **वक्री मंगल**, **वक्री बुध**, पूर्ववत क्रमशः धनु, उच्च की राशि मकर तथा कर्क में रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** तथा **केतु** भी पूर्ववत कर्क और मकर राशि में रहेंगे। **गुरु** व **सूर्य** क्रमशः तुला तथा कर्क राशि में यथावत बने रहेंगे। **शुक्र** –१ अगस्त को मध्याह्न १२.२७ बजे सिंह से कन्या राशि में प्रवेश करेंगे।

चन्द्रमा – २८–२९ जुलाई **मकर** राशि में, ३०–३१ जुला. **कुंभ** में, १ से ३ अगस्त **मीन**, ४–५ अग. **मेष**, ६–७ अग. उच्च की राशि **वृष** में, ८–९ अग. **मिथुन** तथा १०–११ अगस्त को स्वराशि **कर्क** में गोचर करेंगे।

अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

यहाँ अपने देश के इतिहास, भूगोल तथा संस्कृति सम्बन्धी दस प्रश्न दिये गये हैं। इनका उत्तर दें और परीक्षा करें कि अपने देश और संस्कृति के बारे में आप कितना जानते हैं?

१. लंकापति रावण से अंतिम युद्ध के समय देवराज इन्द्र ने क्या दे कर प्रभु श्रीराम की सहायता की?

२. कौरव सेनापति मद्रराज शल्य महाभारत युद्ध में किसके हाथों वीरगति को प्राप्त हुए?

३. प्रसिद्ध रावणेश्वर महादेव का मन्दिर भारत के किस पड़ौसी देश में है?

४. गुरु नानकदेव की जन्मस्थली तलवण्डी में कौन सा अकाल तख्त हैं?

५. भागवत महापुराण में २२ अवतारों का उल्लेख है। इनमें से एक चौबीस तीर्थंकरों में से भी हैं, वे कौन हैं?

६. आक्रमणकारी खिलजी वंश के समाप्त होने के बाद किस योद्धा ने स्वयं को भारत का हिन्दू–सम्राट घोषित किया ?

७. यंत्रों से चलने वाली नौकाओं (जहाजों) का वर्णन पाँच हजार वर्ष पूर्व के किस ग्रन्थ में है?

८. गदर पार्टी की स्थापना कहाँ हुई थी?

९. वे भील सेनानायक कौन थे जिन्होंने हल्दीघाटी के युद्ध में असाधारण वीरता दिखाई?

१०. भारत का १३ वर्ष का कौन सा खिलाड़ी हाल में शतरंज का महारथी (ग्रेण्डमास्टर) बना है?

(उत्तर इसी अंक में हैं)

सर्वस्व समर्पण का पर्व गुरु पूर्णिमा

हमारे यहाँ प्राचीन काल से ही गुरु–शिष्य के बीच उदात्त सम्बन्धों की परंपरा रही है। गुरु हमें अज्ञान से ज्ञान की ओर और अन्धेरे से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। गुरु के मार्गदर्शन में हम जीवन पथ पर अग्रसर होते हैं। माता–पिता के बाद गुरु ही बालक के व्यक्तित्व के निर्माता हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में गुरु को सबसे अधिक पूजनीय माना गया है। इसीलिए तो कहा गया कि **''हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर''**। हमारे देश में गुरु के प्रति सम्मान प्रकट करने का विशेष दिवस **गुरु पूर्णिमा** माना गया है। आषाढ़ मास की पूर्णिमा (इस बार २७ जुलाई)को आने वाले इस दिवस को गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है।

गुरु का अर्थ है भारी। जो ज्ञान में, सहजता में, सरलता, दया और करुणा में भारी हो। भारी अर्थात् श्रेष्ठ अर्थात् सबको मार्गदर्शन देने वाला। महाभारत युद्ध के बाद महर्षि वेदव्यास ने महाभारत और अट्ठारह पुराण लिखे। उन्होंने हिन्दू संस्कृति के आचार–विचार और गुणों का समन्वय कर पूरे विश्व को धर्म के मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। अतः प्रवचनकर्ता, संन्यासी जिस आसन पर बैठते है, उस स्थान को व्यासपीठ भी कहा जाता है। ऐसे अद्वितीय विद्वान और साधक का जन्म आषाढ़ी पूर्णिमा को हुआ था। इसलिये इसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है।

प्राचीनकाल से हमारी परंपरा रही है कि जिसने भी गुरु के रूप में हमारा मार्गदर्शन किया है, हम उनका सत्कार, सम्मान करते आये है। गुरु पूर्णिमा अवसर पर हमारा यह कर्तव्य है कि गुरु के सम्मुख उपस्थित होकर उनका चरण–वन्दन करें। विश्वामित्र ने श्रीराम और लक्ष्मण को, समर्थ गुरु रामदास ने छत्रपति शिवाजी महाराज को, विद्यारण्य ने हरिहर व बुक्का को, स्वामी विरजानन्द ने स्वामी दयानन्द को और श्रीरामकृष्ण परमहंस ने स्वामी विवेकानन्द को राष्ट्र–कार्य के लिए प्रेरित किया। इतिहास में ऐसे उदाहरण हैं, जब किसी प्रतीक को गुरु माना गया है । दसवें गुरु गोबिन्द सिंह ने 'गुरु ग्रन्थ साहिब' को ही गुरु के रूप में मानने का आदेश सिखों को इस प्रकार दिया– **''सब सिक्खन कूं हुक्म है गुरु मान्यो ग्रन्थ''**। इसी प्रकार संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने भी परम पवित्र भगवा ध्वज को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के गुरु के रूप में स्वीकार किया ।

इससे स्वयंसेवक पवित्र जीवन जीने, समाज में फैले अंधकार को दूर करने तथा समाज को संगठित करने के साथ ही विश्व के कल्याण की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। प्रतिदिन संघ स्थान पर फहराने वाला भगवा ध्वज स्वयंसेवकों को संयम–नियम से रहने एवं आपस में सहयोग का मार्गदर्शन करता है।

गुरु पूर्णिमा संघ के ६ उत्सवों में से एक है। प्राचीनकाल से चल रही यज्ञ परम्परा में प्रज्वलित होने वाली अग्नि जैसा यह भगवा रंग सूर्य की ऊर्जा का प्रतीक है। अतः यह भगवा रंग हमारे लिए मंगलकारी है और प्रगति का द्योतक है। ■

भगवा मेरा अभिमान है

आज मैं ऊँचा हूँ तुमसे
क्या दुःख नहीं इस बात से?
मुस्काता परबत बोला भगवा से।
यह बात नहीं अब से
यह बात है तब से
जब भारत जगत गुरु था
और तू उसका प्रतीक था
तुझे देख मैं गदगद होता था।
सदियों पहले आततायियों ने
तेरा अपमान किया
तुझे मुझसे दूर किया।
सदियों तेरी प्रतीक्षा करता रहा ।
तू भी भगवा अडिग रहा
आज फिर लहरा रहा ।
तू मात्र भगवा नहीं,त्याग है बलिदान है,
ज्ञान है, प्रगति है, ऊर्जा है,
शुभता है, शुद्धता है, स्वाभिमान है ।
तू मात्र भगवा नहीं तू मेरा अभिमान है ।

- शिवाली सिंह नरूका

जन्म दिवस पर शत-शत नमन

स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, के उद्घोषक
बाल गंगाधर तिलक
२३ जुलाई

(१८५६–१९२०)

आधुनिक युग के श्रेष्ठ साहित्यकार
मुंशी प्रेमचन्द
३१ जुलाई

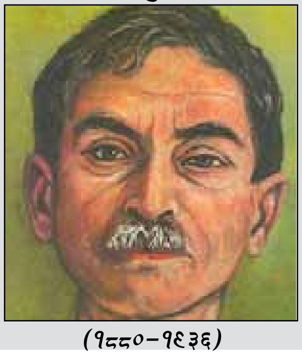

(१८८०–१९३६)

स्वतंत्रता सेनानी तथा हिन्दी के अनन्य समर्थक
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन
१ अगस्त

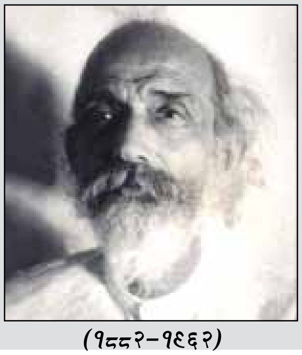

(१८८२–१९६२)

आधुनिक भारत के महान रसायन शास्त्री
डा. प्रफुल्लचंद राय
२ अगस्त

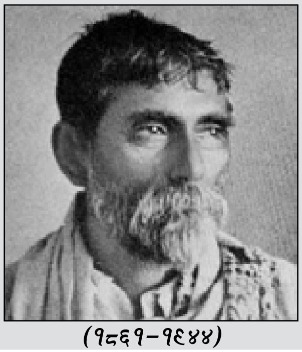

(१८६१–१९४४)

जब सौ नौजवानों ने सिलवासा पर तिरंगा फहरा दिया

१५ अगस्त १९४७ को हमारा देश अंग्रेजों के शासन से मुक्त हुआ। उस समस भारत के कुछ क्षेत्र फ्रांसीसी और पुर्तगालियों के अधिकार में भी थे। पुडुचेरी (पाण्डिचेरी) उसके पास का कारैकल तथा कोलकाता के पास के चन्द्रनगर पर फ्रांसीसियों का कब्जा था। उन्होंने अंग्रेजी राज के समाप्त होने के साथ ही उक्त क्षेत्रों को मुक्त कर दिया। पुडुचेरी अब केन्द्र-शासित राज्य है तथा कारैकल इसका एक जिला है। कोलकाता से लगभग ३५ कि.मी. की दूरी पर स्थित चन्द्रनगर प.बंगाल के हुगली जिले में है। गोआ, दमन और दीव तथा दादरा-नगर हवेली पर पुर्तगाली जमे हुए थे। उन्होंने इन क्षेत्रों पर अधिकार जमाये रखा। दादरा और नगर हवेली दो अलग-अलग भू-भाग हैं। बड़ा नगर हवेली आधा गुजरात और आधा महाराष्ट्र में है। इसके दस-बारह कि.मी. उत्तर-पश्चिम में दादरा है जो पूरी तरह गुजरात में है। इसकी राजधानी सिलवासा है।

तब की केन्द्र सरकार ने जब इसकी मुक्ति का कोई प्रयास नहीं किया तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने जनवरी १९५४ में संघ प्रचारक रामभाऊ वाकणकर के नेतृत्व में यह बीड़ा उठाया। वरिष्ठ साथियों से अनुमति लेकर दादरा-नगर हवेली को मुक्त कराने का प्रयास प्रारम्भ किया गया। अब वे इस कार्य के लिए योग्य साथियों की तलाश तथा साधन एकत्र करने लगे।

गुजराती, मराठी सहित १४ भाषाओं के ज्ञाता श्री विश्वनाथ नरवणे ने पूरे समय क्षेत्र की राजधानी सिलवासा में रहकर व्यूह रचना की। इस कार्य के लिए हथियारों की आवश्यकता थी। हथियारों के लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता थी। यह कार्य प्रसिद्ध मराठी गायक, संगीतकार और फिल्म निर्माता सुधीर फड़के को सौंपा गया।

उपवनों का शहर सिलवासा

सुधीर फड़के ने लता मंगेशकर के साथ मिलकर संगीत के कार्यक्रम का आयोजन किया। इससे जो धन एकत्र हुआ उससे आगे की तैयारी प्रारम्भ हुई। सब व्यवस्था हो जाने पर श्री रामभाऊ ने संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरुजी को सारी योजना बताकर उनका आशीर्वाद भी लिया।

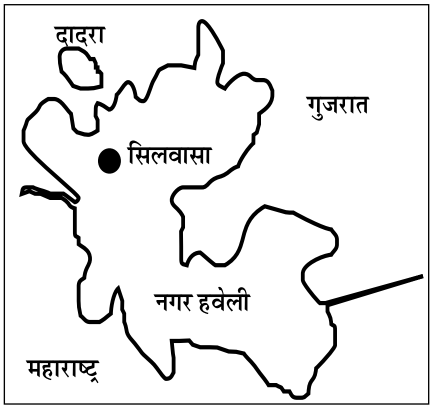

इस कार्य के लिए एक दल बनाया गया जिसे 'मुक्तिवाहिनी' नाम दिया गया। तय हुआ कि ३१ जुलाई की रात सभी कार्यकर्ता पुणे रेलवे स्टेशन पर एकत्र होंगे। संयोग से उस दिन बहुत तेज बारिश हो रही थी। उस तूफानी रात और मूसलाधार वर्षा में स्वयंसेवक वहाँ से कई टुकड़ियों में बँटकर एक अगस्त को मुम्बई होते हुए सिलवासा पहुँचे।

योजनानुसार अंधेरी रात में एक निश्चित समय पर सभी ने चारों ओर से एक साथ पुर्तगालियों पर हमला बोला। पुर्तगाली सैनिकों ने डर कर अपने हथियार डाल दिये। पुर्तगालियों और उनके प्रमुख फिंदाल्गो एवं उसकी पत्नी को बन्दी बना लिया गया। पुर्तगाली अफसर की पत्नी द्वारा काफी प्रार्थना करने पर स्वयंसेवकों ने उन्हें उस स्थान से सुरक्षित बाहर जाने दिया।

२ अगस्त, १९५४ को प्रातः जब सूर्योदय हुआ, तो सिलवासा के मुख्य शासकीय भवन पर भारत का राष्ट्र ध्वज तिरंगा गर्व से लहरा रहा था।

आज सुनने में बड़ा आश्चर्य लगता है; पर यह सत्य है कि केवल ११६ स्वयंसेवकों ने एक ही रात में इस क्षेत्र को पुर्तगालियों से स्वतन्त्र करा लिया।

इस स्वातन्त्र्य-संघर्ष में संघ के कार्यकर्ताओं ने अपने पराक्रम का अद्भुत परिचय दिया। इनमें से कुछ को तो अपने प्राणों की आहूति तक देनी पड़ी। इस कार्य को अंजाम देने में सर्वश्री बाबूराव भिड़े, विनायकराव आप्टे, बाबासाहब पुरन्दरे, डा. श्रीधर गुप्ते, बिन्दु माधव जोशी, मेजर प्रभाकर कुलकर्णी, श्रीकृष्ण भिड़े, नाना काजरेकर, त्रयम्बक भट्ट, विष्णु भोंसले, श्रीमती ललिता फड़के व श्रीमती हेमवती नाटेकर आदि की भी प्रमुख भूमिका थी।

उल्लेखनीय बात यह है कि आजादी के लिए कष्ट भोगने वालों को स्वतन्त्रता सेनानी मानकर तत्कालीन सरकार ने अनेक सुविधाएँ दी; पर यह क्षेत्र संघ के स्वयंसेवकों ने स्वतन्त्र कराया था, इसलिए तत्कालीन सरकार ने इन्हें स्वतन्त्रता सेनानी ही नहीं माना। जब केन्द्र में (१९९८) श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सरकार बनी तो इन्हें यह मान्यता मिली। स्वयंसेवकों ने यह कार्य केवल राष्ट्रहित को सोचकर किया था। इसलिये उन्होंने अपनी ओर से कभी स्वतंत्रता सेनानी माने जाने के लिए नहीं कहा। ■

सिलवासा का शिव मंदिर

आध्यात्मिक दृष्टि से मानव स्वभाव

भारतीय संस्कृति तथा दर्शन में मनुष्य जीवन का अंतिम (प्रमुख) लक्ष्य है आध्यात्मिक प्रगति करते हुए मोक्ष को प्राप्त करना। जिस प्रकार किसी पौधे अथवा फसल के लिए उपयुक्त मिट्‌टी तथा जलवायु चाहिए, उसी प्रकार जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भी उसके अनुरूप जीवन पद्धति चाहिए। इसलिए आध्यात्मिक उन्नति चाहने वालों को अपनी जीवन पद्धति पर निरन्तर ध्यान देना चाहिए। जैसे हमारे चारित्रिक गुण होंगे, वैसी ही हमारी जीवन पद्धति होगी। इस प्रकार यदि हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है तो हमें सावधानीपूर्वक चरित्र निर्माण के गुणों का विकास करना होगा। इस मार्ग में बाधक अवगुणों का प्रयत्नपूर्वक निषेध करना होगा। तभी हमारे लक्ष्य, जीवन पद्धति तथा चरित्र में सांमजस्य होगा तथा हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। यही कारण है कि वेदपूर्व भाग में दिव्य गुणों से युक्त जीवन पद्धति जिसे सामान्य भाषा में धार्मिक जीवन पद्धति कहते हैं की विवेचना की गई है। इस आचरित जीवन पद्धति से मनुष्य न केवल स्वयं बल्कि परिवार, समुदाय, समाज, राष्ट्र तथा प्रकृति (सम्पूर्ण ब्रह्मांड) का विचार कर अपना कर्म करे और ज्ञान–योग्यता अर्जित करे। वेद–अन्त भाग में ज्ञान की विवेचना की गई है।

प्रारब्ध तथा पालन–पोषण के कारण मनुष्य में नैसर्गिक रूप से चारित्रिक गुण, अवगुण अवस्थित होते हैं जो कि मनुष्य का स्वभाव निर्धारित करते हैं। आध्यात्मिकता के आधार पर मनुष्य स्वभाव को निम्नानुसार तीन वर्गों में बांटा जा सकता है –

१. द्वेष प्रधान(राक्षसी) स्वभाव

इस स्वभाव के मनुष्य में किसी भी व्यक्ति, वस्तु अथवा व्यवस्था के प्रति पसंद, नापसंद बहुत गइराई से घर की हुई होती है। उन्हें प्रायः अपने अलावा अन्य सभी अन्यान्य कारणों से नापसन्द होते हैं। जैसे 'क' के पास मुझसे ज्यादा धन है, 'ख' को मुझसे पहले पदोन्नति मिल गई, 'ग' को बहुत सारी पैतृक सम्पति मिल गई, 'घ' को सुन्दर पत्नी एवं धनी ससुराल मिला, अन्य की सन्तान मेरे बच्चों से ज्यादा सफल है इत्यादि इत्यादि। अर्थात् उसे अपने पड़ौसी ही नहीं अपने परिवार के सदस्यों से भी शिकायत रहती है। टीवी चैनल से लेकर सरकार तक और उससे आगे भगवान से भी शिकायत होती है।

ये शिकायतें (द्वेष) धीरे–धीरे इकट्‌ठी होती रहती हैं क्योंकि अधिकांश मामलों में इसे प्रदर्शित करने का अवसर नहीं मिलता अथवा उसे अन्दर दबाने की मजबूरी होती है। जैसे कार्यालय में वरिष्ठ अधिकारी ने बिना कारण ही डाँट दिया, लेकिन जवाब देने पर नौकरी जा सकती है, तो मन ही मन भले गालियां दें, लेकिन पलट कर उसे नहीं डांट सकते। यह दबाया हुआ गुस्सा उस व्यक्ति के स्वभाव को क्रोध प्रधान बनाते हैं। उपरोक्त उदाहरण में वह व्यक्ति घर आने पर बिना उचित कारण के ही बच्चों, पत्नी, माता–पिता पर अपना गुस्सा उतारता है। कई बार क्रोध हिंसा को जन्म देता है। इस प्रकार ऐसे स्वभाव वाले व्यक्तियों में द्वेष, क्रोध, हिंसा पनपती है। सर्व साधारण ही नहीं उसके आसपास वाले लोग भी सम्भावित विपदा से बचने के लिए उससे दूर रहना पसन्द करते हैं। इस स्वभाव के लोग उन्नति के स्थान पर आध्यात्मिक क्षेत्र में अवनति ही करते हैं। समाज के लिए ऐसे व्यक्ति बिना सूंड, पूंछ सींग वाले राक्षस ही हैं।

२. राग प्रधान (आसुरी) स्वभाव

राग का अर्थ है आसक्ति। इस स्वभाव वाले लोग मान, नाम, पद, धन में अत्यधिक आसक्ति रखने वाले होते हैं। बहुत धन कमा लें और अधिक कमा लें, सबसे अधिक धनवान कैसे बनें, ऊँचा पद कैसे पाऐं, हर जगह पर हमें फूल मालाओं से लादा जाए तथा हमारी जय–जयकार हो, हमारी इच्छा ही सबके लिए आदेश समान हो, इसी में लगे रहते हैं। यही नहीं, आए हुए धन , पाए हुए पद–मान हमेशा के लिए संरक्षित कैसे हों, इसी उधेड़बुन में लगे रहते हैं, चूंकि धन, पद की कोई कमी नहीं है, ये खाली समय में इन्द्रियजनित वासनाओं की पूर्ति एवं इसी प्रकार के मनोरंजन में व्यस्त रहते हैं। ये लोग अपने आचरण से अन्य व्यक्तियों को हानि–कष्ट नहीं पहुँचाते हैं, दिखने में सभ्य–सम्भ्रान्त होते हैं, किन्तु आध्यात्मिक सोच से नितान्त परे होते हैं। इनका सोचना होता है कि जिसके पास धन–पद हो उसे धर्म, शास्त्र, अध्यात्म अथवा मोक्ष की क्या आवश्यकता। ये भौतिकवादी जीवन जीते हुए नास्तिक बनने की ओर अग्रसर होते हैं। आसुरी अर्थात् जो इन्द्रिय जनित वासना में संलग्न रहे, अतः उन्हें आसुरी स्वभाव वाला माना जाता है।

३. ज्ञान प्रधान (सात्विक) स्वभाव

इस स्वभाव वाले व्यक्तियों का जीवन आध्यात्मिक उन्नति करते हुए मोक्ष प्राप्ति होता है। मोक्ष का अर्थ है मोह का क्षय होना। आध्यात्मिक क्षेत्र में ज्ञान का अर्थ है आत्म–साक्षात्कार तथा अपने अन्तःकरण में ईश्वर का दर्शन (अद्वैत सिद्धान्त के अनुसार मैं तथा ईश्वर एक हैं, ईश्वर अंश रूप में सबमें हैं, यह संसार न केवल ईश्वर रचित है बल्कि ईश्वर संसार में तथा संसार ईश्वर में बसता है।)

इस स्वभाव वाले व्यक्ति भी धन कमाने,पारिवारिक व सामाजिक दायित्व निभाने के कार्य करते हैं लेकिन ये सब उसके जीवन के अंतिम (सबसे महत्वपूर्ण) लक्ष्य नहीं होते हैं। इनके स्वभाव में सात्विक गुण बहुतायत में तथा प्रबल होते हैं, यही कारण है कि इसे सात्विक स्वभाव भी कहा गया है।

४. स्वभाव में सुधार

व्यक्ति का स्वभाव बदलना आसान नहीं होता। किन्तु आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रयत्न द्वारा मानव अपने अवगुणों का त्याग तथा सद्‌गुणों (दिव्य गुणों) का अपने में विकास कर सकता है। तदनुसार वह द्वेष प्रधान से राग प्रधान तथा इससे आगे ज्ञान प्रधान स्वभाव प्राप्त कर सकता है। गीता के तेरहवें, सोलहवें तथा सत्रहवें अध्याय में आध्यात्मिक उन्नति चाहने वालों के लिए आवश्यक सद्‌गुणों के बारे में विवेचना है, जिनके द्वारा मनुष्य ज्ञान प्राप्ति की योग्यता पाता है।

इन दिव्य गुणों की विवेचना हम क्रमशः अगले अंकों में प्रकाशित करेंगे। ■

जैविक खेती से बोरवा का कायाकल्प हो गया

महाराष्ट्र के अकोला जिले का एक गाँव है बोरवा। अकोला से लगभग ८५ कि.मी. की दूरी पर है यह गाँव। यहाँ ज्यादातर खेती करने वाले भिलाला वनवासी रहते हैं। गाँव है भी घने जंगलों के बीच बसा हुआ। गाँव के लोग खेती करते थे, लेकिन कई बार फसल से खेती का खर्च भी नहीं निकल पाता था। कभी कुछ मुनाफा हुआ भी तो वह बैंक और साहूकारों का कर्ज चुकाने में निकल जाता। ऐसे में गाँव के दो लोगों ने कर्ज से परेशान हो अपने जीवन का अंत कर लिया।

गाँव में रहने वाली नासरी चौहान के पिता भी खेती करते थे। जी-तोड़ मेहनत के बाद भी कई बार फाके मारने की स्थिति आ जाती। उसने किसी तरह दसवीं पास कर ली थी, लेकिन अन्न-दाता किसानों की दयनीय स्थिति से दुखी थी। स्कूल में पढ़ते समय ही उसे किसी ने जैविक खेती के बारे में बताया। यह भी बताया कि **जैविक खेती में कुल लागत एक चौथाई ही आती है।** अब नासरी ने अपने खेत में जैविक खाद और कीट-नाशक काम में लेने का निश्चय किया। नासरी ने अपने पिता को यह बताया तो वे

कतई तैयार नहीं हुए। नासरी ने हिम्मत नहीं हारी। उसने जैविक खेती की पूरी जानकारी ली और खुद ही वर्मी-कम्पोस्ट (खाद) तैयार की। उसकी जिद के आगे किसी की नहीं चली और खेत में जैविक खाद ही डाली गई।

इस बार फसल अच्छी हुई और उसकी गुणवत्ता भी अच्छी थी। लागत भी वाकई रासायनिक खेती से एक चौथाई ही आई थी। उत्साहित हो उस अन्नपूर्णा कन्या नासरी ने अन्य गाँव वालों को भी जैविक खेती करने के लिए समझाया। उसने उनसे वादा किया कि खेती में घाटा हुआ तो भरपाई वह खुद करेगी। इस शर्त पर किसानों ने अपने गाँव की बेटी की बात मान ली। यह वर्ष २०११ की बात है। बोरवा के किसानों ने जोखिम उठाया था, पर उसका परिणाम सुखद रहा। कम लागत में अच्छी फसल पैदा हुई। गाँव वाले खुश थे। अब कर्जा आसानी से चुकाया जा सकता था। दो सालों में बोरवा का कायाकल्प हो गया। बोरवा पूरे जिले और प्रान्त में **जैविक-ग्राम** के नाम से जाना जाने लगा।

अब देश के कृषि-विशेषज्ञ बोरवा में आने लगे। उनसे बात करने वाली अकेली नासरी चौहान। उसे भी अंग्रेजी नहीं आती थी और भारत के कृषि-वैज्ञानिक अंग्रेजी ही समझते थे और अंग्रेजी में ही भारत की खेती को ठीक करने का सपना देखने थे। मजबूरी थी, इसलिये नासरी को अंग्रेजी सीखनी पड़ी। अंग्रेजी बोलना सीखने के लिये वह प्रति-दिन ८५ कि.मी. दूर अकोला जाती थी और वापस आती थी। सात-महीनों तक उसे यह मशक्कत करनी पड़ी और अंग्रेजी सीखने में भी वह सफल हुई। सफलता मिली तो सम्मान भी मिला। महाराष्ट्र सरकार ने उसे 'कृषि-भूषण ' पुरस्कार दिया है। अब तक अनेक संस्थानों से उसे ३३ पुरस्कार मिल चुके हैं। कृषि विद्यापीठ अकोला ने उसे जैविक-कृषि का **ब्राण्ड-अम्बेसेडर** बनाया है।

(साभार-दैनिक जागरण)

अकेले बृजेश ने पहाड़ी काट कर सड़क बना दी

इनसे भी कुछ सीखें

पहाड़ काट कर सड़क बनाने की जब बात आती है तो तुरंत दशरथ मांझी का नाम आता है। बाईस सालों की दिन-रात की मेहनत के बाद इस आधुनिक भगीरथ ने पहाड़ काट कर उस मार्ग से अपने गाँव को अन्य गाँवों से जोड़ दिया था। दशरथ मांझी से प्रेरित होकर कुछ अन्य लोगों ने भी वैसा ही दृढ़ संकल्प लिया। पुष्पनगर ग्राम के बृजेश ने भी ऐसा ही बीड़ा उठाया और तीन साल में दो कि.मी. लम्बी सड़क बना दी।

पुष्पनगर उत्तराखण्ड के चम्पावत जिले का एक छोटा सा गाँव है। गाँव के तीन ओर ऊँची पहाड़ियाँ और चौथी ओर जंगलों के बीच एक ऊबड़-खाबड़ रास्ता। गाँव के बाहर जाने के लिये इसी ऊँचे-नीचे पथरीले रास्ते से दो कि.मी. पैदल चल कर जाना पड़ता था। बच्चों की पढ़ाई के लिये भी इसी रास्ते पर मशक्कत करनी पड़ती थी। स्कूल टेकरी के पास मझोला में है, जो ग्राम पंचायत का मुख्यालय भी है। इसी पुष्पनगर के बृजेश पाण्डेय भारतीय सेना की कुमाऊँ रेजीमेण्ट में हैं। तब उनकी नियुक्ति पिथौरागढ़ में थी। एक बार वे छुट्टियों में अपने गाँव पुष्पनगर आये। वर्षा का मौसम था और पढ़ने वाले बालक उसी फिसलन भरे रास्ते से कुछ नालों को पार कर मझोला जाते थे। बच्चों का कष्ट बृजेश से देखा नहीं गया। उन्होंने औजार उठाये और चल पड़े उस पहाड़ी की ओर।

३९ वर्ष के बृजेश ने काम शुरु कर दिया। **संकल्प की शक्ति के सामने जंगल-पहाड़ों की क्या औकात?** कुछ रास्ता बनने लगा तो किसी न किसी बहाने से छुट्टियाँ ले वे गाँव आने लगे। तीन साल तक वे अपनी धुन में लगे रहे। छैनी, हथौड़ी, गेंती, फावड़े आदि से वे प्रहार करते रहे। आखिर उनका परिश्रम सफल हो गया। घोर कठिनाईयों के बीच उन्होंने अकेले ही दो कि.मी. लम्बी सड़क बना दी। इस पर मोटर साइकिल, जीप और कार चल सकते हैं। इस सड़क ने पुष्पनगर को राष्ट्रीय राजमार्ग १२५ से जोड़ दिया।

हाल ही में उत्तराखण्ड सरकार ने कुमाऊँ रेजीमेण्ट के लांस नायक बृजेश को सम्मानित किया है।

(साभार-दैनिक जागरण)

सुखी व्यक्ति का कुर्ता

चांदपुर (जिला बिजनौर) का राजा था कुंवर सिंह। उसे किसी चीज की कमी नहीं थी, फिर भी उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था। बीमारी के मारे वह सदा परेशान व चिंताग्रस्त रहता था। आस-पास के कई चिकित्सकों ने इलाज किया; लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। दिनों-दिन राजा का स्वास्थ्य गिरता ही गया। जब नगर में यह बात फैली तब नगर के एक बूढ़े व्यक्ति ने राजा के पास आकर कहा- '' महाराज! मुझे आपकी बीमारी का इलाज करने की आज्ञा दीजिए।'' राजा से अनुमति पाकर वह बोला-'' आप किसी सुखी व्यक्ति का कुर्ता पहनिए, अवश्य स्वस्थ हो जाएंगे।''

बूढ़े व्यक्ति की बात सुनकर दरबार के सभी लोग हंसने लगे; लेकिन राजा ने सोचा कि जब इतने इलाज किए है तो एक और सही। राजा ने सेवकों से सुखी व्यक्ति की खोज करने को कहा; लेकिन कोई पूर्णरूप से सुखी मनुष्य नहीं मिला। सभी लोगों को किसी न किसी बात का दुःख अवश्य था।

आखिरकार राजा स्वयं सुखी मनुष्य की खोज में निकला। बहुत तलाश के बाद वह एक खेत पर पहुँचा। जेठ माह की तेज धूप में एक किसान अपने खेत में बेफ्रिक हो गीत गुनगुनाता हुआ काम कर रहा था। उसके चेहरे से प्रसन्नता झलक रही थी। राजा ने किसान से पूछा- '' *भाई ! तुम बहुत खुश नजर आ रहो हो। क्या तुम्हें कोई दुःख नहीं है।*''

किसान बोला- ''ईश्वर की कृपा से मुझे कोई दुःख नहीं है।'' यह सुन कर राजा भी बहुत प्रसन्न हुआ कि मेरे मन की मुराद यहां पूरी हो जाएगी। राजा ने किसान का कुर्ता मांगने का मन बना कर उसके शरीर की तरफ देखा तो पाया कि किसान तो केवल धोती ही पहने हुए हैं, कुर्ता तो वहां है ही नहीं। उसकी देह का आवरण (कुर्ता) तो उसका पसीना ही बना हुआ है।

राजा समझ गया कि मेहनत करने के कारण ही किसान वास्तव में सुखी और निरोग है। अब राजा ने आराम का जीवन छोड़कर, परिश्रम करने का संकल्प लेकर जीवन जीने लगा, परिणामस्वरूप राजा थोड़े ही दिनों में बिना किसी उपचार के पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया। ■

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं?

बाल मित्रों! यहाँ अपने देश के एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र की पहचान करें और अपने ज्ञान की परीक्षा करें।

- आपका जन्म नासिक के भगूर गांव में हुआ था।
- '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' लिखकर ब्रिटिश शासन को हिला दिया।
- अग्रेंज सरकार ने इनको दो जन्मों के कारावास की सजा सुनाई।

(उत्तर इसी अंक में हैं)

बाल प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रों, अपने देश में अनेक महान् नारियों ने जन्म लिया है। उनमें से कुछ ऐसी हैं, जो प्रातः स्मरणीय हैं अर्थात् प्रातःकाल जिनका नाम लेना, याद करना पुण्य देने वाला होता है। ऐसी महान् नारियाँ हैं-**अरुन्धती, अनसूया, सावित्री, माता सीता, द्रौपदी, सती, गार्गी, मीरा, कण्णगी, महारानी लक्ष्मीबाई, अहल्याबाई होल्कर, चेन्नमा, रुद्रमाम्बा, भगिनि निवेदिता तथा माँ सारदा।** इस बार की प्रश्नोत्तरी इन्हीं सोलह मातृ-देवताओं पर हैं। दिये हुए चार उत्तरों में से सही उत्तर का चुनाव करें तथा अपने ज्ञान की परीक्षा करें।

१. मुगल अकबर की सेना के छक्के छुड़ा देने वाली गढ़मण्डला की वीरांगना कौन थीं?
(क) अहल्याबाई (ख) दुर्गावती (ग) लक्ष्मीबाई (घ) राजमाता रुद्रमाम्बा

२. महान् विदूषी अरुन्धती किन महर्षि की धर्मपत्नी थीं?
(क) विश्वामित्र (ख) वशिष्ठ (ग) अगस्त्य (घ) अत्रि

३. पांचाली किस तेजस्वी नारी का एक और नाम है?
(क) दुर्गावती (ख) द्रौपदी (ग) सारदा (घ) सती

४. वे आयरलैण्ड की थीं पर भारत आकर पूर्ण रूप से भारतीय हो गईं, उनका नाम बतायें?
(क) सावित्री (ख) कण्णगी (ग) भगिनि निवेदिता (घ) रुद्रमाम्बा

५. किस तेजस्वी नारी ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश को छह-छह महीने के बालक बना दिया था?
(क) अनसूया (ख) सावित्री (ग) गार्गी (घ) कण्णगी

६. वेदों की रचना में सहयोग करने वाली महान् विदुषी कौन थीं?
(क) गार्गी (ख) अनसूया (ग) अरुन्धती (घ) निवेदिता

७. निम्न में से किनका एक नाम जानकी भी है?
(क) सती (ख) गार्गी (ग) सीता (घ) सावित्री

८. साक्षात् यमराज के पंजे से अपने पति को छुड़ा लेने वाली सामर्थ्यशाली महिला कौन थी?
(क) चन्नम्मा (ख) अरुन्धती (ग) रुद्रमाम्बा (घ) सावित्री

९. योगेश्वर श्रीकृष्ण को समर्पित मेवाड़ की भक्त शिरोमणि महारानी कौन थीं?
(क) दुर्गावती (ख) अहल्याबाई (ग) मीराबाई (घ) लक्ष्मीबाई

१०. वे दक्ष प्रजापति की कन्या थीं तथा भगवान शंकर की अर्द्धांगिनी, उनका नाम बतायें?
(क) अनसूया (ख) गार्गी (ग) सती (घ) कण्णगी

(उत्तर इसी अंक में हैं)

धारा ३७० को हटाना ही स्थायी समाधान है

❑ *नरेन्द्र सहगल*

जम्मू-कश्मीर में गहरे में जड़ें जमा चुके पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद को समाप्त करने के लिए महबूबा सरकार को गिराकर प्रदेश को राज्यपाल के हवाले कर दिए जाने का सीधा अर्थ यही है कि अब सुरक्षा बलों को सख्ती करने के सभी अधिकार दे दिए गए हैं। पाकिस्तानी घुसपैठियों, सशस्त्र आतंकवादियों, पत्थरबाजों, प्रशासन में घुसे गद्दारों और इन चारों की पीठ थपथपाने वाले अलगाववादियों की गुलामी से कश्मीर घाटी को आजाद करवाने के इस कदम से आतंकवाद खत्म होगा या और अधिक बढ़ेगा? इस सवाल पर दिल्ली की सरकार ने भली-भांति विचार कर ही लिया होगा। देश की जनता को विश्वास है कि अब की बार आतंकवाद के जन्मदाताओं को भी बख्शा नहीं जाएगा।

दरअसल पाकिस्तान के साथ लगे इस सीमावर्ती प्रांत में जो कुछ भी हो रहा है वह साधारण कानून व्यवस्था के बिगड़ने का मामला नहीं है, ये तो कट्टरपंथी और एकतरफा मजहबी जुनून में से निकल रही इस एक ऐसी राष्ट्रघातक आग है जिसे वार्ताओं, समझौतों और आर्थिक पैकेज जैसे छोटे-मोटे फायर ब्रिगेड बुझा नहीं सकते। भारत के संविधान, राष्ट्रध्वज, संसद और भूगोल को अमान्य करने वाले ऐसे तत्व कभी भी ऐसे समाधान को सामने नहीं आने देंगे जिससे उनके अलगाववादी उद्देश्य को नुकसान पहुंचे। पाकिस्तान की खुली मदद और कश्मीर में भारतीय संविधान के अंतर्गत सुरक्षा ले रहे अलगाववादियों की सरपरस्ती में कश्मीर के युवकों ने हाथों में संगीनें उठाकर इस्लामी जेहाद के लिए कमर कसी है।

कश्मीर की 'मुक्कमल आजादी' के लिए चलाए जा रहे जेहाद का पहला हिस्सा था कश्मीर के हिन्दुओं को निकाल बाहर करना, ये सफल रहा। अब सेना, पुलिस और सरकारी प्रतिष्ठानों पर गुरिल्ला हमला करके दूसरे हिस्से को पूरा किया जा रहा है। सुरक्षाबलों पर हो रही पत्थरबाजी साधारण घटना न होकर बाकायदा खूनी जिहाद की सोची समझी राजनीति है।

कश्मीर में न गरीबी है और न ही राजनीतिक पक्षपात जैसी कोई चीज है। सारा उत्पाद एकतरफा मजहबी जुनून है। वहां तो 'इस्लाम' और 'निजामे-मुस्तफा' की हुकूमत के लिए खूनी संघर्ष हो रहा है। इस धार्मिक उद्दंडता को कश्मीर में सक्रिय अलगाववादी पार्टी **डेमोक्रेटिक फ्रीडम पार्टी** के अध्यक्ष शब्बीर शाह के शब्दों (पोस्टरों) से समझा जा सकता है..-

''इस्लाम की क्रांति का सूर्य उग रहा है, आस्था की संतानों को अब आगे आना चाहिए और भारत से आजादी पाने की कोशिश करनी चाहिए। अल्ला की इच्छा हमारी मार्गदर्शक है, कुरआन हमारा संविधान है, जेहाद हमारी नीति है और शहादत हमारी आकांक्षा है''।

उल्लेखनीय है कि सख्त सैन्य कार्रवाई से समस्या का तात्कालिक समाधान जरूर निकलेगा, परन्तु कश्मीर समस्या के स्थाई हल के लिए कुछ ठोस और स्थाई कदम भी उठाने होंगे। अनुच्छेद ३७० को हटाकर इस प्रदेश को भारत के शेष प्रदेशों के समकक्ष लाया जाए। इस विशेष अनुच्छेद के समाप्त होते ही अलगाववाद का आधार चरमरा जाएगा। २७ अक्टूबर १९४७ को पूरे जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय हो चुका है। प्रदेश की जनता द्वारा चुनी गई संविधान सभा ने इसे मान्य किया है। अतः पाकिस्तान द्वारा जबरदस्ती गैर कानूनी ढंग से हथियाए गए कश्मीर के एक तिहाई भाग को सैनिक कार्रवाई से वापिस लेकर भारत में शामिल किया जाए। अंतरराष्ट्रीय कानूनों-परम्पराओं के तहत पाकिस्तान में चल रहे आतंकी प्रशिक्षण शिविरों को **सर्जिकल स्ट्राइक** जैसी प्रभावशाली सैन्य कार्रवाई से ध्वस्त किया जाए। कश्मीर से विस्थापित होकर आए हिन्दुओं की सम्मानजनक एवं सुरक्षित घर वापसी की सुचारु व्यवस्था के लिए केन्द्र की सरकार को यथाशीघ्र ठोस कदम उठाने चाहिए।

कश्मीर में जेहाद के नाम पर खून-खराबा कर रहे युवकों को कश्मीरियत, जम्हूरियत, इन्सानियत और राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाकर उन्हें देश की मुख्यधारा में लाने के लिए देशभक्त और मानवतावादी मुस्लिम विद्वानों को अपनी भूमिका निभानी होगी। यह प्रसन्नता की बात है कि वर्तमान केन्द्र सरकार ने हिम्मत जुटाकर सुलग रही कश्मीर घाटी को पाकिस्तान परस्त तत्वों की कैद से मुक्त करवाने के लिए जरूरी सैन्य कार्रवाई प्रारम्भ कर दी है।

यदि अब भी राष्ट्रीय स्तर के और प्रादेशिक राजनीतिक दलों ने अपनी दलगत राजनीति को छोड़कर इस रणनीति का समर्थन न किया तो देश की सुरक्षा और अखंडता खतरे में पड़ सकती है। ■

पाथेय-कण का आगामी विशेषांक

(विजयदशमी-दीपावली विशेषांक)

विविधता में एकता

विषय पर प्रकाशित होगा। भारत की विविधता में छिपी मौलिक एकता को प्रदर्शित करने वाले लेख पाठक भी प्रेषित कर सकते हैं।

लेख भेजने की अंतिम तिथि-३१ अगस्त २०१८

यह विशेषांक १६ अक्तूबर को प्रकाशित होगा तथा अक्तू(द्वि.) व नवम्बर (प्र.) का संयुक्तांक होगा।

विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि इस विशेषांक में अपने उत्पाद का विज्ञापन दे उसे ग्राम-ग्राम तक पहुँचायें।

-: विज्ञापन दरें :-

रंगीन कवर पृष्ठ अंतिम	₹ ५,००,०००/-
रंगीन कवर २ तथा ३	₹ २,००,०००/-
रंगीन पृष्ठ	₹ १,००,०००/-
सामान्य पृष्ठ (पूरा)	₹ ५०,०००/-
सामान्य पृष्ठ (आधा)	₹ २५,०००/-
सामान्य पृष्ठ (चौथाई)	₹ १५,०००/-

संयुक्त राष्ट्र संघ ने कहा बच्चों को बन्दूक थमा रहे हैं नक्सली

सुरक्षा बलों की कड़ाई से परेशान कश्मीर के आतंकी अब अपनी सुरक्षा के लिये अबोध बच्चों का सहारा ले रहे हैं। सेना और पुलिस से बचने के लिए आतंकी बालकों-किशोरों को सुरक्षा बलों के सामने खड़ा कर देते हैं। ये हिंसक अलगाव-वादी इन बच्चों से सेना पर पत्थर भी फिंकवाते हैं। यही काम बुरी तरह से घिरे नक्सली भी कर रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव श्री एंतोनियों गुतेरस ने गत दिनों इस संगठन की महासभा में उक्त टिप्पणी की। वे महासभा के समक्ष गत एक वर्षों का प्रतिवेदन प्रस्तुत कर रहे थे। इस प्रतिवेदन में कहा गया है कि कश्मीर के आतंकी तथा नक्सली गुरिल्ले अब बच्चों को हिंसा में धकेल रहे हैं।

मैच जीतने के लिये इंग्लैण्ड के खिलाड़ियों ने योगाभ्यास किया

फुटबाल के विश्व-कप में इंग्लैण्ड के खिलाड़ियों ने भारतीय खेल कबड्डी और योग का भी मुकाबलों की तैयारी में सहारा लिया। विश्व-कप शुरु होने के पहले के प्रशिक्षण शिविर में इंग्लैण्ड के सभी खिलाड़ी प्रातःकाल पहले योग करते थे और बाद में कबड्डी खेलते थे। गत ११ जुलाई को क्रोएशिया से होने वाले सेमी-फाइनल वाले दिन भी वे सुबह के समय अपने होटल के पार्क में अपनी चटाइयाँ लेकर आये और एक घण्टे तक योगाभ्यास किया। योग तो पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो ही रहा है, कबड्डी का महत्व भी अन्य देशों के लोग अब समझने लगे हैं।

गोमूत्र से ठीक हो सकता है कैंसर

जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि गोमूत्र से कैंसर जैसी महामारी को ठीक किया जा सकता है। एक साल तक गहन परीक्षण के बाद ये बायोटेक्नोलाजी के विद्वान उक्त निष्कर्ष पर पहुँचे हैं। शोध में प्रोफेसर श्रद्धा भट्ट और रूकम सिंह तोमर के साथ शोध छात्रा कविता जोशी भी शामिल थीं। इस शोध-टोली ने यह हिसाब भी लगाया कि कैंसर कीटाणुओं को नष्ट करने के लिये गोमूत्र की कितनी मात्रा आवश्यक है।

प्रो. श्रद्धा भट्ट ने पत्रकारों को बताया कि शोध अभी जारी रहेगी तथा गोमूत्र से कोई गोली बनाने का प्रयास किया जायेगा, जिसे दवा के रूप में आसानी से लिया जा सके। उन्होंने यह भी कहा , कि मुँह, फेंफड़े, गुर्दों, स्तनों का कैंसर आसानी से गोमूत्र से ठीक किया जा सकता है।

मदर थेरेसा की शिष्याएं बच्चे बेचती पकड़ी गईं

मदर थेरेसा ने अपना पूरा जीवन भारत के कोलकाता में बिताया। वहाँ उन्होंने 'मिशनरीज ऑफ चेरिटी' संस्था स्थापित की जिसका उद्देश्य सेवा करना था। इस संस्था ने कई स्थानों पर 'निर्मल हृदय होम' भी स्थापित किये। भारत सरकार ने मदर थेरेसा को 'भारत-रत्न' से सम्मानित किया। उन्हें शांति का नोबल पुरस्कार भी मिला। मदर थेरेसा ने ईमानदारी से स्वीकार किया था कि उनकी सेवा का उद्देश्य लोगों को ईसाई बनाना ही है। बीस साल पहले ५ सित. १९९७ के दिन उन्होंने कोलकाता में ही अंतिम श्वास ली।

मदर थेरेसा ने जो **निर्मल हृदय होम** स्थापित किये थे उनमें से एक रांची में भी है। इसकी दो ननें (महिला पादरी) गत ४ जुलाई को एक बच्चा बेचने के आरोप में रांची में गिरफ्तार की गईं। उक्त निर्मल हृदय घरों में बेसहारा महिलाओं को भी रखा जाता है। टाइम्स ऑफ इण्डिया (५,६जुलाई) के अनुसार एक ऐसी ही महिला का नवजात शिशु उक्त ननों ने बारह लाख में उत्तर प्रदेश के एक दम्पत्ति को बेच दिया। गिरफ्तार ननों ने स्वीकार किया कि सभी निर्मल होमों में बच्चे बेच देने का अवैध धन्धा कई वर्षों से चल रहा है। उक्त ननों ने भी अब तक कई नवजात शिशुओं को बेचने की बात मानी है।

आतंकियों ने अफगानिस्तान में बीस हिन्दू मारे

केवल भारत में ही हिन्दू आतंकियों का निशाना नहीं बन रहे, भारत के बाहर भी जिहादी भारतवासियों का संहार कर रहे हैं। गत १ जुलाई को अफगानिस्तान के जलालाबाद में एक आत्मघाती बम के धमाके में उन्नीस लोग जान से हाथ धो बैठे। इनमें से एक सरदार अवतार सिंह खालसा भी थे जो अफगानिस्तान में चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे थे। पूर्वी अफगानिस्तान के प्रमुख नगर जलालाबाद में १ जुलाई को राष्ट्रपति अशरफ घानी ने एक अस्पताल का उद्घाटन किया था। भारतीयों का वह दल राष्ट्रपति महोदय से ही मिलने जा रहा था। मार्ग में ही एक आतंकी उनकी बस के आगे खड़ा हो गया। बस के रुकते ही आतंकी ने अपने शरीर में बंधे बम का धमाका कर दिया।

अफगानिस्तान कभी गान्धार कहलाता था। कौरवों की माता इसी प्रदेश की थीं। बीस साल पहले तक यहाँ एक लाख भारतीय थे। आतंकियों के डर से अब मात्र एक हजार हिन्दू गान्धार में बचे हैं। उधर अफगानिस्तान के तालिबानियों ने माना है कि १ जुलाई का हमला उन्होंने ने ही किया था।

ऑस्ट्रिया की सरकार ने सात मस्जिदें बंद की

दिल्ली से प्रकाशित होने वाले उर्दू 'दैनिक रोजनामा राष्ट्रीय सहारा' के अनुसार आस्ट्रिया की सरकार ने उन सभी मस्जिदों को बंद करने का निर्णय लिया है जिनको विदेशी सूत्रों से सहायता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जिन इमामों को विदेशों से धन मिलता है उन्हें भी देश से बाहर करने का निर्णय किया गया है। सात मस्जिदों को बंद किया गया है और साठ इमामों को बर्खास्त करने के बाद देश से निष्कासित कर दिया गया है। ऑस्ट्रिया के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर वान डेर बेलेन ने कहा कि यह कदम देश की सुरक्षा को देखते हुए उठाया गया है और ये कदम उठाने से पूर्व हर मामले में बारीकी से जांच की गई है।

सरकार ने राजधानी वियना में स्थित एक ऐसी मस्जिद को बंद किया है जिसका प्रबंध तुर्क कर रहे थे। इसके अतिरिक्त मज़हबी संस्था 'अरब कम्युनिटी' पर भी प्रतिबंध लगाया गया है जो कि कई मस्जिदों का प्रबंध करती थी। सरकार ने स्पष्ट किया कि देश विरोधी गतिविधियों को सहन नहीं किया जा सकता।

साम्यवादी कट्टरता देश के लिए सबसे खतरनाक

पुरातत्व विभाग में अधिकारी रहे डा. के.के.मोहम्मद ने कहा है कि मुस्लिम कट्टरता तथा मतान्धता से अधिक खतरा देश को साम्यवादी मतान्धता से है। मलयालम में लिखी पुस्तक **ज्ञानेन भारतीयन** में उन्होंने उक्त विचार व्यक्त किये हैं।

डा. मोहम्मद ने विख्यात पुरातवत्वेत्ता डा.बी.बी. लाल के साथ अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर प्राचीन मंदिर के अवशेष खोजने का काम किया था। पुरातत्व-विशेषज्ञों की इस टोली ने ही बाबरी ढांचे के नीचे खुदाई कर सम्राट विक्रमादित्य द्वारा पुनर्निर्मित श्रीराम मंदिर के भग्नावशेष खोजे थे। खुदाई में निकले प्रमाणों के आधार पर यह पूरी तरह सिद्ध हो गया कि मीर बाकी ने श्रीराम जन्मभूमि पर बने मन्दिर को ध्वस्त कर वहाँ मस्जिद बनाने का प्रयास किया था। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने भी उक्त प्रमाणों को स्वीकार कर निर्णय दिया था कि विवादित स्थान श्रीराम की जन्मभूमि है।

पुरातत्व विभाग से सेवा-निवृत्त होने के बाद श्री मोहम्मद ने 'ज्ञानेन भारतीयन' पुस्तक लिखी। इसका अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ। इस पुस्तक में डा.के.के. मोहम्मद ने लिखा है कि वाममार्गियों ने श्रीराम जन्मभूमि का विवाद हल करने में सबसे अधिक बाधाएं डालीं। बाबरी समर्थक अयोध्या, मथुरा और काशी के जन्मस्थान हिन्दू समाज को सौंपने को तैयार हो गये थे। विपिन चन्द्र, रोमिला थापर,एस.गोपाल, डा.इरफान हबीब, आर. एस.शर्मा, सूरज भान आदि घोर वाममार्गियों ने मुस्लिम नेताओं को बहका दिया और समझौता नहीं होने दिया।

इसीलिये डा.मोहम्मद ने कामरेडी कट्टरता को देश के लिये सबसे अधिक खतरनाक बताया।

जिहादियों से बाल-बाल बचीं समीना बेगम

समीना बेगम दिल्ली की हैं और उन्होंने मुस्लिम समाज में प्रचलित कुप्रथाओं बहु-विवाह और हलाला के विरूद्ध उच्चतम न्यायालय में याचिका लगाई है। आधुनिक समय में एक व्यक्ति चार-चार पत्नियाँ रखे तो यह न केवल नारी की स्वतंत्रता और समानता का हनन है बल्कि मानवाधिकारों पर भी कुठाराघात है। और हलाला तो ऐसी प्रथा है जिसका उल्लेख भी कोई सभ्य व्यक्ति नहीं कर सकता। इनको हटाने और गैर-कानूनी बनाने के लिये समीना बेगम ने याचिका लगाई है। इसी से जिहादी तत्व उनसे नाराज हैं।

दैनिक जागरण (१जु.) के अनुसार गत २७ जून को वे दिल्ली के ओखला विहार में किराये का मकान देखने गईं। वहाँ कुछ जिहादियों ने उन पर हमला किया। उनके कपड़े फाड़ दिये और ऑटो-रिक्शा में रखा उनका सामान बाहर फैंक दिया। इसी के साथ उनके बच्चों को जिंदा जला देने की धमकी दी गई। जिहादियों ने यह धमकी भी दी कि यदि याचिका वापस नहीं ली गई तो समीना बेगम के साथ दुष्कर्म किया जायेगा।

कैसी घोर असहिष्णुता है। आश्चर्य यह है कि सारी सेकुलर बिरादरी इस घटना पर चुप रही, किसी ने निन्दा में एक शब्द भी नहीं कहा।

बालिकाओं को बेचने वाले बांग्लादेशी पकड़े गये

भारत में ढाई करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठिये रह रहे हैं। ये देश पर आर्थिक बोझ तो हैं ही, कानून-व्यवस्था के लिये भी चुनौती बने हुए हैं। अधिकतर घुसपैठिये अपराधों में लिप्त हैं और कई तो पाकिस्तान के लिये जासूसी भी करते हैं। जब भी इन घुसपैठियों को निकालने का कोई प्रयास होता है, सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ उनकी ढाल बन जाता है, उनके बचाव के लिये कमर कस लेता है।

दैनिक भास्कर (७ जु.) के अनुसार गत ६ जुलाई को गोरखपुर रेल-स्टेशन पर जीआरपी ने अवध एक्सप्रेस में बैठी २६ कन्याओं को मुक्त कराया। 'अवध एक्सप्रेस' बिहार के मुजफ्फरपुर से आ रही थी तथा बांद्रा (मुम्बई) तक जाने वाली थी। सभी बालिकाएं १० से १४ साल की हैं। उनके साथ यात्रा कर रहे लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया । पूछताछ में पता लगा कि मासूम बालिकाएं बिहार के चम्पारण जिले की हैं। इन बालिकाओं को बिक्री के लिये आगरा ले जाया जा रहा था। खुफिया विभाग के अनुसार कई बांग्ला-देशी घुसपैठिये बच्चियों की तस्करी और उनसे वैश्या-वृत्ति कराने के अपराध में लिप्त हैं।

अंग्रेजों का लिखा इतिहास गलत और भटकाने वाला है

गत २६ जनवरी को जब पद्म पुरस्कारों की घोषणा हुई तो उसमें सिरोही के महारावल श्री रघुवीर सिंह का नाम भी था। उन्हें इतिहास के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य करने के लिये **पद्म श्री** से सम्मानित किया गया था। राजस्थान विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए.(इतिहास) में स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। इसके बाद उन्होंने पूरा जीवन इतिहास के अनुसंधान एवं पुनर्लेखन में लगा दिया। पिछले दिनों इतिहास के सम्पूर्ण ज्ञान-कोष श्री रघुवीर सिंह ने कहा कि, अंग्रेज साम्राज्यवादियों ने जो इतिहास भारत के लोगों को पढ़ाया वह गलत, वास्तविकता से दूर एवं भटकाने वाला है। 'इतिहास अपने को दोहराता है', यह प्रचलित कहावत है। सिरोही के महारावल ने यह भी कहा कि इतिहास हमें सबक सिखाता है। इतिहास से सीख कर हमको ऐसा प्रयास करना चाहिये कि इतिहास दोहराया नहीं जाये।

उन्होंने यह भी कहा कि प्रत्येक छात्र को भारत का सही इतिहास पढ़ाया जाना चाहिये।

सोशल मीडिया पर विसके की गोष्ठी

सोशल मीडिया एक तरह से दुनिया के विभिन्न कोनों में बैठे उन लोगों का परस्पर संवाद है जिनके पास इंटरनेट की सुविधा है। इसके माध्यम से न सिर्फ हम अपने विचारों को दुनिया के सामने रखते हैं बल्कि दूसरों के विचारों सहित विश्व की सभी घटनाओं से भी अवगत होते हैं। आज सोशल मीडिया सम्पर्क, संवाद तथा प्रचार–प्रसार का एक सशक्त माध्यम बन गया है। आम जन में इसका सकारात्मक प्रयोग बढ़े इसी को लेकर गत १ जुलाई को 'टीम वेपन' एवं 'विश्व संवाद केन्द्र, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय 'सोशल–मीडिया कॉन्क्लेव' का आयोजन हुआ। यह कार्यक्रम स्थानीय अग्रवाल पी.जी. कालेज के सभागार में रखा गया था।

कार्यक्रम में देश के प्रतिष्ठित रक्षा विशेषज्ञ मेजर जनरल जी.डी.बक्शी, जाने–माने लेखक राजीव मल्होत्रा, वरिष्ठ पत्रकार संध्या जैन, प्रज्ञा प्रवाह के अखिल भारतीय संयोजक जे.नंदकुमार, साइबर विशेषज्ञ रक्षित टंडन तथा सामाजिक कार्यकर्ता अम्बर जैदी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। विभिन्न सत्रों के माध्यम से वक्ताओं ने सोशल मीडिया से जुड़ी बारीकियों पर मंथन करते हुए बताया कि सोशल मीडिया का बेहतर उपयोग कैसे किया जा सकता है और कैसे झूठी अफवाहों एवं समाचारों से बचा जा सकता है। सभी का कहना था कि जब तब आम नागरिक जागरूक नहीं होगा तब तक अराष्ट्रीय तत्व देश को सोशल–मीडिया के माध्यम से हानि पहुँचाते रहेंगे। कार्यक्रम के समापन अवसर पर श्री नंदकुमार ने कहा कि सोशल मीडिया पर मन और बुद्धि का एक वैचारिक युद्ध चल रहा है।

२२वीं सिन्धु दर्शन यात्रा सम्पन्न

२२वां सिन्धु दर्शन उत्सव गत २३ से २६ जून तक लेह में सिन्धु के पावन तट पर मनाया गया। पवित्र सिन्धु नदी का प्रवेश भारत में यहीं से होने के कारण यह महोत्सव प्रतिवर्ष यहीं मनाया जाता है। इस यात्रा में इस बार तेरह सौ दस यात्रियों ने भाग लिया। देश की सात पवित्र नदियों में से एक सिन्धु नदी जिसके तट पर हमारी वैदिक संस्कृति पल्लवित हुई, जिसने हमारे देश को एक सांस्कृतिक पहचान दी, उसी से आमजन का परिचय कराना ही इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य है।

इस बार की यात्रा में राजस्थान से २१४ तीर्थयात्रियों ने पवित्र सिन्धु का दर्शन कर सौभाग्य प्राप्त किया। महोत्सव के पहले दिन २३ जून को 'लद्दाख कल्याण संघ' द्वारा सभी यात्रियों का स्वागत एवं सम्मान किया गया। दूसरे दिन २४ जून को पवित्र सिन्धु नदी का पूजन एवं राष्ट्रीय ध्वज वंदन कार्यक्रम रखा गया था। २६ जून की शाम लेह के खेल मैदान में सभी यात्रियों का विदाई समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रा.स्व.संघ के सरकार्यवाह श्री भैय्या जी जोशी थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि देश में सभी तीर्थ आस्था एवं भक्ति भाव के प्रतीक हैं तभी निरंतर जुड़ाव बना रहता है। सिन्धु दर्शन से भी हम उसी श्रद्धा से आस्था के साथ जुड़ें।

पर्यावरण विशेषज्ञों की तृतीय संगोष्ठी

पौधारोपण कर पर्यावरण को बचाने के लिए एक नया संगठन बना है, जिसे नाम दिया गया है–'अपना संस्थान' (अमृता देवी पर्यावरण नागरिक संस्थान) इसके माध्यम से स्थान–स्थान पर पौधारोपण एवं वर्षा जल संरक्षण की दिशा में कारगर कार्य किये जा रहे हैं। गत ५ जुलाई को भीलवाड़ा में संस्थान से सम्बन्धित पर्यावरण विशेषज्ञों की एक गोष्ठी। स्थानीय 'माणिक्य लाल वर्मा टैक्सटाईल एण्ड इंजीनियरिंग कालेज' के सभागार में हुई। इस में प्रदेश १५० पर्यावरण विशेषज्ञों ने पर्यावरण संरक्षण को लेकर चिंतन–मनन किया। ज्ञात हो कि संस्थान ने पिछले दो वर्षों में पाँच लाख से अधिक पौधे लगाये हैं।

प्रतिभाशाली विद्यार्थी सम्मानित

विद्या भारती की राजस्थान इकाई ने गत ५ जुलाई को जयपुर स्थित बिड़ला सभागार में प्रतिभावान छात्र–छात्राओं का सम्मान किया। कार्यक्रम में विद्या भारती द्वारा संचालित आदर्श विद्या मंदिर के विद्यालयों में बोर्ड की परीक्षा में सर्वाधिक अंक लाने वाले ३२ प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रतीक चिन्ह, प्रमाण पत्र एवं प्रोत्साहन राशि देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षा राज्य मंत्री श्री वासुदेव देवनानी थे। समारोह की अध्यक्षता मा. शिक्षा बोर्ड, अजमेर के अध्यक्ष डा. बद्रीलाल चौधरी ने की। इसी समारोह में प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के अभिभावकों एवं स्कूलों के प्रधानाचार्यों का विद्या भारती की ओर से शॉल एवं श्रीफल देकर सम्मान भी किया गया ।

बाल संस्कार शिविरों का समापन

भारतीय सिन्धु सभा की अजमेर इकाई की ओर से आयोजित 'सिन्धी बाल संस्कार शिविरों' का समापन गत ८ जुलाई को हुआ। यह शिविर अजमेर शहर में दस अलग–अलग स्थानों पर लगे थे। इन शिविरों में ६ से १५ वर्ष तक की आयु के आठ सौ से अधिक बालक–बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर में सिन्धी भाषा का ज्ञान, सिन्धु सभ्यता एवं संस्कृति का परिचय तथा राष्ट्रप्रेम की शिक्षा दी गई। समापन का यह कार्यक्रम स्थानीय 'प्रेम–प्रकाश आश्रम' में रखा गया था। इस अवसर पर प्रतिभागियों ने सिन्धी गीतों की आकर्षक प्रस्तुति दी। इसके साथ ही बालिका–सम्मान को लेकर एक लघु नाटिका भी बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई।

'उच्च शिक्षा में नैतिकता एवं कार्यसंस्कृति' विषय पर हुई गोष्ठी

गत ८ जुलाई को 'शैक्षिक मंथन संस्थान' की ओर से एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। गोष्ठी का विषय 'उच्च शिक्षा में नैतिकता एवं कार्य संस्कृति' था। यह गोष्ठी शास्त्री नगर स्थित 'क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र' के सभागार में रखी गई थी। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. डी.पी.सिंह थे। विभिन्न सत्रों के माध्यम से शैक्षिक जगत के ख्यातनाम विचारकों ने शिक्षा नीति में नैतिकता के समावेश पर अपने–अपने विचार रखे। इसी अवसर पर 'शैक्षिक मंथन संस्थान' की ओर से प्रकाशित विशेषांक 'शिक्षा और संस्कार' का विमोचन भी हुआ।

हींग से स्वास्थ्य लाभ

भारतीय रसोई में हींग की अपनी खास जगह है। भारतीय व्यंजनों में खुशबू और स्वाद के लिए इसका उपयोग किया जाता है। हींग अनेक प्रकार के रोगों में रामबाण दवा है। इसके कुछ घरेलू उपाय नीचे दिये जा रहे हैं–

- सौंठ, कालीमिर्च, अजवाइन, सफेद जीरा, काला जीरा, शुद्ध घी में भुनी हींग और सेंधा नमक सब समान मात्रा में लेकर बारीक पीस लें। इस चूर्ण का एक चम्मच प्रतिदिन खाना खाने के बाद पानी के साथ सेवन करें। इसके नियमित सेवन से पेट की गैस की समस्या हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी।
- **हींग का एक छोटा–सा टुकड़ा (दाल के दाने के बराबर) पानी से निगल लेने पर पेट दर्द से बहुत जल्दी राहत मिलती है।**
- आवश्यकतानुसार हींग को पानी में घोल लें। अब इस घोल से घुटनों पर लेप करें। ऐसा करने से घुटनों के दर्द में आराम मिलता है।
- **एक चुटकी हींग को एक गिलास पानी में उबाल लें। इसके पश्चात् जब पानी गुनगुना हो तब उस पानी से कुल्ला करें। दांतों के दर्द में आराम मिलेगा।**
- यदि आपको दाद की समस्या है तो एक कटोरी गन्ने के रस में आधा चम्मच हींग पाउडर मिला कर सुबह–शाम दाद पर लगाएं। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में दाद खत्म हो जाएगा।
- **पुराने गुड़ में चुटकी भर हींग मिलाकर चने के समान गोली बना लें। इसका सेवन करने से हिचकी तुरंत बंद हो जाती है।**
- दांत में कीड़ा लग जाने पर रात को सोते वक्त दाँत के नीचे हींग का छोटा टुकड़ा दबाकर सोयें। ऐसा करने से कीड़े अपने–आप निकल जायेंगे।
- **कब्ज होने पर हींग के एक छोटे टुकड़े में चुटकी भर मीठा सोडा मिलाकर रात को सोने से पहले पानी के साथ लेने से आराम मिलता है।**
- मटर के दाने के बराबर हींग को लेकर हथेली पर पानी के साथ घिसकर नाभि के पास लगाने से अपच, गैस और डकार में लाभ मिलता है।
- **खाना खाने के पहले चुटकी भर भुनी हुई हींग और दो चुटकी काला नमक मिला कर पहले निवाले के साथ खाने से वायु विकार नहीं होता है।**
- सर्दी के कारण सिरदर्द हो रहा हो तो एक चम्मच पानी में चुटकी भर हींग घोल लें। इस पानी को सिर पर लगाएं। सिरदर्द में तुरंत आराम मिलेगा।
- **एक टुकड़ा हींग को २ चम्मच पानी में घोलकर उसकी २–२ बूंदें रोजाना सुबह–सायं नाक में डालें। इस उपाय से माइग्रेन की समस्या में बहुत जल्द आराम मिलता है।**
- पसलियों में दर्द हो तो एक छोटी कटोरी पानी में मामूली सी हींग घोलकर दर्द वाले स्थान पर लेप करें, आराम मिलेगा।

मन में उम्मीदों की मशाल जलाये रखना

जब नीरस हो हर पल और ठहरा सा हो मन,
आँखों से ओझल हो उम्मीदों की किरण,
जब अपनों से ही गम हो, और अपनों का ही वार ,
रिश्तों की उलझनों में जब मिलने लगे हार ,
जब निराशा से लगने लगे व्यर्थ सा जीवन ,
और इसे ख़त्म करने को आतुर हो काल का हर क्षण ,

तब कुछ पल भावनाओं को भूल एक काम और करना
अंत स्वीकार करने से पहले यह भी ज़रूर गौर करना ।

कि अपने ही आस-पास, अनाथ, मजबूर, निर्धन, शोषित,
कुछ अपनों से धिक्कारित, कुरीति वश अछूत घोषित
माँ, बाप, भाई, बहन और परिवार से अनजान
न अक्षर का ज्ञान, न अस्तित्व की पहचान
भूख, प्यास, घर, वस्त्र के अभाव में तड़पते लोग बहुत हैं
प्यार के एक-एक पल को तरसते लोग बहुत हैं
याद करना उन अनगिनत लोगों के बारे में
जिनका कोई भी नहीं सुनसान गलियारों में।

एहसास लेना कि क्या निजी समस्या अपने समाज से भी बड़ी है?
क्या मात्र स्वयं के लिए ही जीवन की सांसें बनी हैं?

निज स्वार्थ को त्याग एक प्रण नया रखना
खुद के हित से ऊपर समाज और राष्ट्र को रखना
निजी उलझनें भी ज़रूर दूर होंगी किसी एक दिन,
मन में उम्मीदों की मशाल जलाये रखना ।।

– **कुणाल बरडीया,** जयपुर

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी– अपना रथ देकर, युधिष्ठिर, श्रीलंका, श्रीदमदमा साहब, भगवान ऋषभदेव, खुशरू खान, महाभारत, सेनफ्रांसिस्को (अमरीका), राणापूंजा, प्रज्ञानानंद,

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी – १. (ख),२.(ख),३. (ख), ४. (ग),५. (क),६. (क),७. (ग),८. (घ),९. (ग),१०. (ग)

उत्तर महापुरुष पहचानो - वीर सावरकर

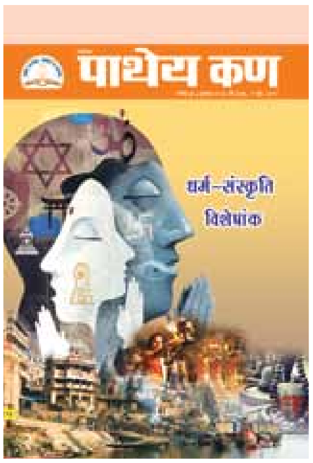

अंक संदर्भ – १ जून २०१८

अभूतपूर्व विशेषांक

इस अंक में प्रकाशित धर्म, संस्कृति, राष्ट्रीयता, अल्पसंख्यकवाद, धर्म निरपेक्षता की व्याख्या ने मेरी सारी भ्रांतियों को दूर कर दिया है। इस अर्थ में यह अंक आंखें खोल देने वाला है।

■ **डा. संजय पाराशर**, *जयपुर*

पाथेय के धर्म-संस्कृति विशेषांक में सभी लेख पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। राष्ट्र को जीवित रखना है तो संस्कृति को बचाए रखना अति आवश्यक है।

■ **गोपाल सैकड़ा**,*दौसा*

विशेषांक में स्वामी संवित् सुबोधगिरि जी का लेख 'संस्कृति और सभ्यता' अत्यन्त ही मर्मस्पर्शी व नवीन जानकारी देने वाला था। संस्कृति के बिना सब निष्प्राण हो जाएगा। यह भी सच है कि संस्कृति राष्ट्र की आत्मा व भूखण्ड राष्ट्र का शरीर है।

■ **राकेश चौहान**, *पीलवा(नागौर)*

पाथेय कण का धर्म-संस्कृति विशेषांक अनुपम एवं अभूतपूर्व है। यह ज्ञानवर्धक के साथ में भ्रांत धारणाओं को स्पष्ट करने वाला है। साररूप में यह विशेषांक अति विशिष्ट बन पड़ा है।

■ **टेकचन्द शर्मा**, *झुंझुनू*

जून (प्र.) का धर्म-संस्कृति विशेषांक बड़ा ही प्रेरक है। इस अंक को पढ़ने से मेरे ज्ञान में निश्चित ही वृद्धि हुई है।

■ **श्यामलाल लखरा**,*बावड़ी,(जोधपुर)*

विशेषांक का मुख पृष्ठ विषय की सार्थकता एकदम स्पष्ट कर रहा है।

■ **विशाल शर्मा**,*सवाईमाधोपुर*

पाथेय के जून (प्र.) अंक को धर्म-संस्कृति विशेषांक रूप देकर हमारी संस्कृति व सभ्यता की रक्षा हेतु किया गया प्रयास सराहनीय है। सार गर्भित 'मनोगत' गागर में सागर के समान है।

■ **सिमरथाराम सेवदा**, *धोरीमन्ना (बाड़मेर)*

धर्म-संस्कृति विशेषांक के सभी लेख पठनीय, नवीन जानकारी से युक्त, प्रबोधनात्मक एवं चिन्तन-मनन करने योग्य हैं।

■ **डा. जगदीशचन्द**, *सोलापुर(महाराष्ट्र)*

संघ के अ.भा.प्रचार प्रमुख रहे

श्री मा.गो.वैद्य का आशीर्वाद

'पाथेय कण' का 'धर्म-संस्कृति विशेषांक' एक अत्यंत सुंदर और विचारोत्तेजक अंक है। सभी लेख पठनीय हैं। पूरा अंक इस कारण संग्राह्य बन गया है। ऐसा ज्ञानवर्धक संग्राह्य अंक प्रकाशित करने पर आपका हार्दिक अभिनंदन।

किन्तु, पूरा अंक पढ़ने के बाद लगा कि 'धर्म' और 'रिलीजन' का अन्तर तथा 'धर्म' की पूरी परिभाषा प्रकट करने वाला और एक लेख होता, तो उसकी गुणवत्ता और वृद्धिगत होती। शेष शुभ।

स्नेहांकित

१२.०६.२०१८

(मा.गो.वैद्य)

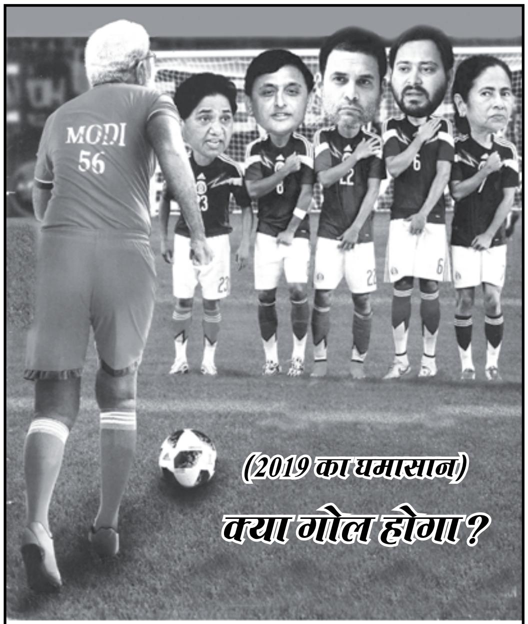

(साभार - 'द वीक')

अफगानिस्तान में हुई हिंसा पर

रा.स्व.संघ के सरकार्यवाह की श्रद्धांजलि

अफगानिस्तान के जलालाबाद प्रांत में इस्लामिक कट्टरपंथी आतंकवादी शक्तियों द्वारा हिन्दू-सिखों की अमानवीय हत्या पर हम गहरा शोक व्यक्त करते हुए इस दुष्कृत्य की कठोर शब्दों में भर्त्सना करते हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति दे व शोक-संतप्त परिवारों को इस अकल्पनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

आशा है कि अफगानिस्तान सरकार दोषियों को चिह्नित कर कठोर दंड सुनिश्चित करेगी व भारत सरकार से आग्रह है कि इस घटना की गंभीरता को समझते हुए उचित कदम उठाये।

विश्व की सभी लोकतांत्रिक शक्तियों का आह्वान है कि वे एकजुट होकर इस कट्टरपंथी आतंक को समूल नष्ट करने के लिए कठोर निश्चयात्मक कार्रवाई करें।

३ जुलाई,२०१८ **सुरेश (भय्या) जोशी**